Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

जो यावि अणायगे सिया,
जे वि य पेसगपेसगे सिया।
इइ मोणपयं उवट्ठिए,
णो लज्जे समयं सया चरे।।

एक सर्वोच्च अधिपति हो और दूसरा उसके नौकर का नौकर हो। वह सर्वोच्च अधिपति मुनिपद की प्रव्रज्या स्वीकार कर (पहले से प्रव्रजित अपने नौकर के नौकर को वंदना करने में) लज्जा का अनुभव न करे, सदा समता का आचरण करे।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 7 • 22 - 28 नवंबर, 2021 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 20-11-2021 • पेज : 12 • ₹ 10

साधु के पास संयम की संपदा होती है : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १५ नवंबर, २०२१

युग प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि सत्संगत का महत्त्व है। चतुर्मास चल रहा है, परिसंपन्नता में पाँच दिन भी शेष नहीं हैं। चतुर्मास भी सत्संगति का एक सुंदर अवसर होता है। जहाँ चारित्रात्माएँ या ज्ञानी-ध्यानी लोग प्रवास करते हैं, उनके संपर्क में आने वालों को अनेक आध्यात्मिक, धार्मिक, जीवनोपयोगिक जानकारियाँ प्राप्त हो सकती हैं।

तत्त्वज्ञ ज्ञानी साधु संपर्क में आने वालों को बातचीत या प्रवचन के माध्यम से कुछ बताता है। यथार्थ बोध देने का प्रयास करता है, सुनने-कहने का, संपर्क में आने वालों का कल्याण पथ प्रशस्त हो सकता है। एक आदमी को भी दृढ़-धर्मी बना देना कितना बड़ा उपकार का कार्य हो सकता है। तत्त्व समझाकर धार्मिक या श्रावक बना देना एक महत्त्वपूर्ण काम हो सकता है। जैसे राजा परदेशी बना था।

समझाने और समझने की कला का योग हो तो सफलता प्राप्त हो सकती है। कुमार श्रमण केशी और राजा परदेशी में अपनी-अपनी क्षमता थी। राजा परदेशी प्रतिबुद्ध हो गया कुमार श्रमण केशी के साथ संवाद करने से। दोनों तार्किक हो तो श्रोताओं को भी अच्छा लाभ मिल सकता है। समझपूर्वक सम्यक्त्व-श्रावकत्व ग्रहण करना, धर्म को स्वीकार करना उसकी मानो कोई अलग ही महिमा होती है।

कुमार श्रमण केशी आस्तिक दर्शन के और राजा परदेशी नास्तिक दर्शन का जानकार था। दोनों के अपने-अपने सिद्धांत थे। कुमार श्रमण केशी का सिद्धांत था अन्य जीव अन्य शरीरवाद तो राजा परदेशी का सिद्धांत तद् जीव-तद् शरीरवाद था। दोनों में पूरा गहरा विरोध था। विरोध में भी अविरोध को खोजा जा सकता है। भेद में अभेद को देखा जा सकता है। जीव का भी अस्तित्व है, अजीव का भी अस्तित्व है।

जीव और अजीव में फर्क तो है, पर कई रूपों में एकरूपता भी है। भेद नजर जल्दी आ जाता है। अभेद दिखाई नहीं देता है। भेद और अभेद को भी समझ लिया जाए। कुमार श्रमण केशी और राजा परदेश के प्रसंग को विस्तार से समझाया। संत के दरबार में राजा आ गया। फकीर के पास अमीर आ गया। साधु के पास जो संयम की संपदा है, वो गृहस्थ में नहीं, इसीलिए अमीरी-फकीरी के सामने झुक जाती है।

राजा परदेशी सत्संगत में आ गया तो बोध भी प्राप्त हो गया। सम्यक्त्वी बन गया। सत्संगती बन गया। त्यागी साधु की उपासना करने वाले को अच्छा लाभ मिल सकता है। 'सत्संगत' से सुख मिलता है' गीत का संगान किया। सम्यक् दीक्षा ग्रहण करवाई।

मुख्य नियोजिका जी ने चार प्रकार की कथाओं का विवेचन करते हुए कहा कि कथाओं से तत्त्वों का निरूपण मिलता है। तत्त्व से हमें दृष्टि उपलब्ध होती है, जिससे हम अपनी दृष्टि शुद्ध कर सकते हैं। प्रवाचक विस्तारपूर्वक धर्म की व्याख्या करता है। सम्यक्त्व प्राप्त होता है और श्रोता के मन में वैराग्य की उत्पत्ति होती है।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि संसार में चार बातें दुर्लभ हैं। मनुष्य जन्म, श्रुत, श्रद्धा और संयम में पराक्रम। हमारे जीवन में श्रद्धा का विशेष महत्त्व है, यह विस्तार से समझाया।

पूज्यप्रवर ने मंगलभावना समारोह में निर्मल सुतरिया, योगेश चंडालिया, सुमित नाहर, प्रदीप आंचलिया, प्रमिला गोखरू, राजेश सामसुखा, सुनील तलेसरा, विजय सुराणा, सुरेश चोरड़िया, महावीर लोढ़ा, वनीता भानावत, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने अपनी भावना अभिव्यक्त की, जो विभिन्न व्यवस्थाओं से जुड़े हुए हैं।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि पूज्यप्रवर संकल्प बल के प्रबल धनी हैं।

सोमवार को आचार्यप्रवर के सान्निध्य में प्रदेश के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, विधानसभा अध्यक्ष सीपी जोशी तथा अन्य कई गणमान्यजन प्रतिनिधि पहुँचे। प्रदेश के मुखिया के साथ गणमान्य नेताओं ने आचार्यश्री के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। आचार्यश्री से मुख्यमंत्री का संक्षिप्त वार्तालाप का क्रम रहा। जिसमें आचार्यश्री ने उन्हें अहिंसा यात्रा के समापन कार्यक्रम, चतुर्मास पश्चात जयपुर आगमन की जानकारी के साथ अहिंसा यात्रा के संकल्पों को बताया। मुख्यमंत्री ने आचार्यश्री के जनवरी माह में जयपुर आगमन पर तथा अहिंसा यात्रा समापन कार्यक्रम में उपस्थित होने की अपनी भावना व्यक्त की। आचार्यश्री से मंगल प्रेरणा व शुभाशीष प्राप्त कर स्वयं को धन्य महसूस करते हुए मुख्यमंत्री अपने काफिले के साथ रवाना हो गए।

कोरे ज्ञान से नहीं आचरण के संयोग से सम्मान मिलता है : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १४ नवंबर, २०२१

संबोधि प्रदाता, युग पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि सूयगड़ो आगम में बताया गया है कि एक आदमी बहुश्रुत है, शास्त्र पारगामी है। शास्त्रों का वेत्ता होना भी विशेष बात है। एक आदमी के पास विभिन्न विषयों का ज्ञान होता है। अपने धर्म के सिद्धांतों एवं अन्य धर्मों की बातों को भी वह जान लेता है।

अनेक भाषाओं, अनेक विषयों का ज्ञान किसी-किसी के पास हो सकता है। बहुश्रुत एक विशिष्ट व्यक्ति होता है। बहुश्रुत से ज्ञान मिल सकता है। साधु और बहुश्रुत है, यह तो सोने में सुहागा की बात हो जाती है। ज्ञान और आचार दोहरी विशेषताओं वाला होता है। कई लोग तत्त्व को जानते तो हैं, पर आचरण करने में सक्षम नहीं हैं। कई आचरण करने में सक्षम हैं, पर ज्ञान शून्य है। जो तत्त्व को जानते भी हैं और आचरण में लाते भी हैं, ऐसे लोग दुनिया में विरल होते हैं।

(शेष पृष्ठ २ पर)

✦ मन, वचन व काया की प्रवृत्ति योग है। राग-द्वेष मुक्त प्रवृत्ति में योग उजले होते हैं। जबकि राग-द्वेषयुक्त प्रवृत्ति में योग मलिन होते हैं।

—आचार्यश्री महाश्रमण

काम और अर्थ पर धर्म का अंकुश रहना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १३ नवंबर, २०२१

आगमवेत्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में जन्म के साथ मृत्यु का गहरा संबंध है और इतना गहरा संबंध है कि जन्म है, तो मृत्यु को होना ही पड़ता है। ऐसा नहीं हो सकता कि कोई जन्म तो ले रहा है, शरीर युक्त बन रहा है और मृत्यु उसकी नहीं हो, ऐसा नहीं होता है। इस तरह मृत्यु का जन्म के साथ कभी न टूटने वाला अटूट संबंध है।

मृत्यु आती है, तो आदमी-प्राणी आगे चला जाता है। उसकी सारी कामनाएँ यहीं छूट जाती हैं। साथ में जाता है–तेजस और कार्मण शरीर पर सिद्ध गति वाले जीवों को छोड़कर। आत्मा और कार्मण शरीर साथ में है, तो आगे फल भी सांसारिक अवस्था में भोगना होता है। मोक्ष में जाने वाली आत्मा अकेली जाती है, कोई शरीर वहाँ नहीं जाता है।

कर्मों के साथ आदमी जाता है जैसे वृक्ष से फल टूट जाता है। वैसे ही आयु के क्षीण होने पर ये जीवन का धागा टूट जाता है। धागा टूट जाता है, तो उसको जोड़ने के लिए गाँठ दी जाती है। इसी प्रकार आदमी का आयुष्य यहाँ पूरा होता है, तो आगे फिर नया आयुष्य शुरू हो जाता है। यह स्थिति है, दुनिया की कि भोग्य वस्तुएँ साथ में नहीं जाती हैं।

ऐसी स्थिति में आदमी सोचे कि जो चीजें साथ नहीं जाने वाली हैं, उनका कितना स्नेह करूँ। उनकी ओर कितना ध्यान दूँ। जो आत्मा साथ में जाने वाली है, उस पर कितना ध्यान दूँ। कार्मण शरीर पर कितना ध्यान दूँ। आत्मा और कार्मण शरीर पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। जो यहीं रह जाने वाले हैं, उन पर ज्यादा मोह क्यों करें? यह एक प्रसंग से समझाया कि आदमी जिंदा है, तभी उसका महत्त्व है।

आँख बंद हो जाने के बाद आदमी भोग्य वस्तुओं को छोड़ अपने कर्मों के साथ आगे चला जाता है। कामनाएँ अधूरी भी रह सकती हैं, पूरी हो न हो। अपेक्षित कामनाओं को पालना भी नहीं चाहिए। कम कामना वाला आदमी सुखी रहता है। काम-भोगों का आकांक्षी जो आदमी होता है, वह दुःखग्रस्त हो सकता है। कृतकर्मों का फल भोगना पड़ता है, ऐसी स्थिति में आदमी पाप-कर्मों से बचने का प्रयास करें।

आदमी विचार करे कि मैं जीवन में अध्यात्म और धर्म के लिए कितना समय निकालता हूँ। रोज सामायिक का कर्म चलता रहे। गृहस्थ जीवन में अर्थ, काम और धर्म चलना चाहिए। धर्म एक रथ है, काम और अर्थ इसके दो पहिए होते हैं। इन पहियों पर धर्म का अंकुश रहे। तो गाड़ी ठीक-ठाक चल सकती है, वरना अर्थ और काम उच्छृंखल और अनर्थकारी हो सकते हैं। आदमी धर्म को छोड़ दे इतना अर्थ के पीछे नहीं दौड़ना चाहिए। काम का भी अतिक्रमण न हो, धर्म का अंकुश रहे।

गृहस्थ को धर्म के साथ पारिवारिक और सामाजिक दायित्व पर भी ध्यान देना चाहिए। गार्हस्थ्य जीवन में भी संतुलन रहे। अर्थ और काम पर नैतिकता-ईमानदारी धर्म का अंकुश रहे, ताकि वे दोनों उच्छृंखल न हो सके। कार में ब्रेक भी हो और लाइट भी हो। धर्म ब्रेक है और धार्मिक ज्ञान लाइट है।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि आदमी में लोभ व तृष्णा के भाव जाग सकते हैं। बुद्धि जिसके पास होती है, स्मरण-शक्ति उसकी बेजोड़ हो जाती है। जिसमें कार्य में सफलता मिल सकती है। भारतीय प्रतिभा का लोहा माना जाता है। हमें शुद्ध भावों से भावित होना है।

साध्वी अतुलयशा जी ने अपने गीत की प्रस्तुति दी। जैन जीवन युवा समिति, भीलवाड़ा के सदस्य पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ पहुँचे। यश-अमन ने गीत की प्रस्तुति दी। अमृतवाणी से सुखराज सेठिया ने अपने विचार रखे।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

कोरे ज्ञान से नहीं आचरण के संयोग से...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ज्ञान संपन्न होना भी एक विशेषता की बात हो जाती है। जो बहुश्रुत है, न्यायवेत्ता है या धर्म से जुड़ा धार्मिक आदमी है, ऐसे भी लोग अगर मायाकृत असत् आचरण में मूर्च्छित होते हैं, तो कर्मों के द्वारा तीव्र रूप में छिन्न होते हैं। पाप तो किसी का बाप नहीं। ज्ञान का अपना महत्त्व है, आचार का अपना महत्त्व है, यह एक प्रसंग से समझाया। कि कोरे ज्ञान से ही नहीं, आचरण से भी सम्मान मिलता है।

आदमी के पास बुद्धि है, साथ में भाव भी शुद्ध होना चाहिए। विद्यालयों में ज्ञान भी मिलता है, पर कोरा ज्ञान आधा विकास है। साथ में आचरण है, तो पूरा ज्ञान है। ज्ञान के साथ संस्कार भी मिले। अच्छे आचरण जीवन में आएँ तो विद्यार्थी सुयोग्य बन सकते हैं।

आचरणों की शुद्धि आवश्यक है। हमें अपने जीवन में ज्ञान का जितना विकास हो सके प्रयास करना चाहिए, आचरणों पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। साधु आचरणों में शुद्ध है, भले उसमें ज्ञान न हो, समिति-गुप्ति का अच्छा पालन है, तो वह बारहवें गुणस्थान तक जा सकता है। चौदह पूर्वों के धारक भी आगे नरक-निगोद में जा सकते हैं।

गृहस्थ जीवन में भी, आचरणों में सदाचार होना चाहिए। आदमी कदाचार से बचे। भ्रष्टाचार, अत्याचार, दुराचार और अनाचार से बचें। सदाचार, शुद्धाचार इनको जीवन में स्थान देने का प्रयास करना चाहिए। शास्त्रकार ने कहा है कि बहुश्रुत भी आचरण के अभाव में छिन्न हो सकता है, पाप कर्म बंध कर सकता है। हमें गलत आचार से बचकर, सम्यक् आचार के पथ पर चलने का प्रयास करना चाहिए, यह काम्य है।

पूज्यप्रवर ने भीलवाड़ावासियों को सामुहिक रूप में गुरु-धारणा ग्रहण करवाई। शासनश्री मुनि सुरेश कुमार जी की जीवन कथा 'जो मैंने जीया' पुस्तक जो जैविभा द्वारा प्रकाशित है, श्रीचरणों में लोकार्पित की गई। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया। मुनिश्री एकांत साधना का प्रयोग भी कर रहे हैं। अच्छा लंबा संयम पर्याय करीब ६४ वर्ष का है। आत्म-बल से प्रेरणा मिल सकती है। मुनिश्री के प्रति मंगलकामना है कि आध्यात्मिक साधना अच्छी चलती रहे।

मुख्य नियोजिका जी ने फरमाया कि साधक पढ़ा हुआ ज्ञान बुद्धि में योजित कर लेता है। अनुप्रेक्षा से ज्ञान की गहराई में जा सकते हैं। अनुप्रेक्षा को विस्तार से समझाया। हम चाहे जैसी भावना से भावित हो सकते हैं।

मुनि संबोध कुमार जी ने मुनि सुरेश कुमार जी की जीवन कथा 'जो मैंने जीया' का संपादन किया है। उन्होंने अपनी भावना श्रीचरणों में अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया। नाहर सिस्टर एवं हिरेन चोरड़िया ने गीत की प्रस्तुति दी।

ईमानदारीपूर्वक व्यापार करना भी धर्म का एक स्वरूप है : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १० नवंबर, २०२१

जिनशासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि अर्हत् वाङ्मय में कहा गया है–धर्म शब्द बहुत प्रचलित है। दुनिया में कितने-कितने लोग धार्मिक कहलाते हैं। धर्म के दो प्रकार हो जाते हैं। एक पूजा उपासना संबंधी धर्म, दूसरा आचरणात्मक धर्म। पूजा-उपासना की अपने-अपने धर्म-संप्रदाय में अलग-अलग विधियाँ होती हैं। उन्हीं विधियों के अनुसार लोग पूजा-उपासना भी करते हैं।

धर्म का दूसरा प्रकार है–आचरणात्मक धर्म। आदमी के व्यवहार में, जीवन में धर्म रहे। पूजा, उपासना, मेडिटेशन आदि के लिए तो समय निकाला जाए तो वो धर्म हो सकता है। परंतु आचरणात्मक धर्म के लिए समय निकालने की जरूरत नहीं, जो कार्य करो उसी में धर्म को जोड़ दो। जैसे व्यापार करो तो उसमें ईमानदारी को जोड़ दो। बातचीत करो तो उसमें सच्चाई और शांति को जोड़ दो। गुस्सा नहीं करना, झूठ नहीं बोलना। यों आचरणों के साथ ही धर्म हो सकता है।

एक प्रसंग से समझाया कि धर्म के लिए अलग से समय निकालने की अपेक्षा नहीं, धर्म हो जाएगा, यदि जिंदगी में नशा नहीं करोगे, जिंदगी में कभी चोरी नहीं करोगे और हो सके तो जिंदगी में कभी झूठ नहीं बोलोगे। जीवन में ईमानदारी रहे।

दुनिया में आस्तिक लोग भी हैं, नास्तिक लोग भी हैं। नास्तिक आदमी परमात्मा या मोक्ष को तो नहीं मानता। पुण्य-पाप का फल या पूर्वजन्म, पुनर्जन्म को नहीं मानता पर वर्तमान जीवन को तो अच्छा रखो, पापों से बचें। आचरणात्मक धर्म को स्वीकार करो। जीवन अच्छा रहेगा। दैनिन्दन जीवन के साथ, जीवन के आचरणों के साथ धर्म जुड़ जाए।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

व्यक्ति को पापों से बचने का प्रयास करना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ८ नवंबर, २०२१

अध्यात्म के सुमेरू आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि सूयगड़ो आगम में कहा गया है—हमारी दुनिया की मानो एक नियति है कि जन्म लेने वाला व्यक्ति कभी न कभी अवश्य मृत्यु को प्राप्त होता है। ऐसा नहीं हो सकता कि जन्म है, पर मृत्यु नहीं है। अथवा मृत्यु है, पर जन्म नहीं है। ये दोनों सिरे होते हैं।

मनुष्य हो या अन्य प्राणी मृत्यु सबके लिए अनिवार्य है। देवों का भी च्यवन, उद्वर्तन, अवसान होता है। स्थावर हो या त्रस हर प्राणी के लिए मृत्यु अवश्यंभावी है।

यह मृत्यु का नियम है कि कुछ भी खा लो, पी लो, मृत्यु से छुटकारा नहीं। ऐसी कोई वैज्ञानिक खोज भी नहीं कि मृत्यु न आए। खोज वहीं होगी, जहाँ कुछ मिलने की संभावना हो। भगवान महावीर भी इस देहावस्था में अमर नहीं रहे। सिद्धावस्था में अमरत्व हो जाता है।

शास्त्रकार ने कहा है कि देखो बालक भी मर जाते हैं, बुढ़े आदमी मर जाते हैं और तो क्या कर्मस्य प्राणी भी मर जाता है। जैसे बाज पक्षी बटेर को हरण कर लेता है। इसी प्रकार मौत बाज की तरह बटेर रूपी जीव को पकड़ लेती है। मौत के मुँह में जाने के बाद जीव दसों दिशाओं को देखे, पर कौन बचाए। किसकी ताकत है, मौत से हमेशा के लिए बचा ले।

दुनिया की ये स्थिति है, तो क्या करना चाहिए? आदमी को पापों से बचने का प्रयास करना चाहिए। आतंक और मृत्यु को देखने वाला आदमी पाप से बच सकता है। यह जीवन अनंत नहीं है, शांत है।

उत्तराध्ययन आगम के दसवें अध्ययन में कहा गया है—गौतम! तुम्हारा ये शरीर परिजीर्ण हो रहा है, केश सफेद हो रहे हैं। सारी इंद्रियों का बल क्षीण हो रहा है, प्रमाद मत करो। पाप से बचने का उपाय है कि यदा-कदा जीवन की समाप्ति को ध्यान में लाना। ये वैराग्य पूरक गीत ये भान कराते हैं कि कभी मौत होने वाली है।

आगम में कहा गया है कि शरीर अनित्य है। प्रेक्षाध्यान पद्धति में आचार्य महाप्रज्ञ जी अनित्य अनुप्रेक्षा का भी प्रयोग बताते थे कि यह शरीर अनित्य है, इसका चिंतन करने से वैराग्य भाव पुष्ट हो सकता है। बचपन में ही बोध मिला तो कितनों ने बचपन में साधुत्व स्वीकार कर लिया। वे धन्य है जो जीवन में संयम को स्वीकार कर लेते हैं, उसका आजीवन निर्वहन कर संयमावस्था में इस शरीर का परित्याग कर देते हैं।

भारत सरकार के अल्प संख्यक आयोग के विजय सामपाल पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ पधारे। पूज्यप्रवर ने उन्हें आशीर्वचन फरमाया कि राजनीति में अध्यात्म और नैतिकता रहती है, तो राजनीति शुद्ध रह सकती है।

आचार्य भिक्षु आलोक संस्थान के पदाधिकारी श्रीचरणों में पहुँचे। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया कि यह संस्थान आचार्य भिक्षु के नाम से जुड़ा है। साथ में आलोक जुड़ा है। आलोक प्रकाश देने वाला होता है। सम्मान का कार्यक्रम भी हो रहा है। लक्ष्मण सिंह कर्णावट विशिष्ट व्यक्ति हैं। सेवा में हमेशा इनका सहयोग रहता है। इनको प्रज्ञा सम्मान दिया जा रहा है। ये अपनी साधना करते रहें। साथ में भीतर का प्रयास भी उजागर होता रहे।

डॉ० कर्नल दलपतसिंह को भी प्रज्ञा सम्मान दिया जा रहा है, उनके प्रति भी मेरी मंगलकामना, आचार्य भिक्षु आलोक संस्थान भी आध्यात्मि-धार्मिक प्रवृत्ति करता रहे।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि जिन कल्पित मुनि कंठस्थ ज्ञान करते थे। उसी से वे समय काल की जानकारी कर लेते थे। तेरापंथ में भी कंठस्थ ज्ञान की परंपरा रही है। पूज्य डालगणी का भी ज्ञान गहरा था।

भारत सरकार अल्प संख्यक आयोग से विजय सामपाल ने अपनी भावना रखी। हितेश लोढ़ा, संयम सिंघी, रितु जैन, मेघा डांगी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

आचार्य भिक्षु आलोक संस्थान का परिचय दिया गया। लक्ष्मणसिंह कर्णावट एवं कर्नल दलपतसिंह ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। लाछुड़ा निवासियों को पूज्यप्रवर ने सेवा का अवसर प्रदान करवाया। जसराज ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

ईमानदारीपूर्वक व्यापार करना भी...

(पृष्ठ २ का शेष)

गृहस्थों के लिए व्यापार एक आवश्यक कार्य है। पर व्यापार में आचार कैसा है, वह महत्त्वपूर्ण है। भीलवाड़ा वस्त्र नगरी है। आदमी को कपड़ा भी चाहिए। व्यापार भी एक प्रकार की समाज सेवा है। व्यापारी के जीवन में भी अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम हों। व्यापार में अशुद्धता न आए। यह एक प्रसंग से समझाया कि सोते समय भगवान का नाम लेना चाहिए।

धोखा देना पाप का क्रम है। पाप से स्वयं का ही नुकसान होगा। पाप का फल मिलता है, यह धर्म का सिद्धांत है। विश्वास ईमानदारी के आधार पर जम सकता है। नैतिक मूल्यों का विकास हो। सेवा अशुद्ध न बन जाए। व्यापार में बेईमानी न हो, यह एक प्रसंग से समझाया कि व्यापार में चालाकी न हो। व्यापारियों में, ग्राहकों में ईमानदारी रहे, यह काम्य है। पूज्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा के तीन उद्देश्यों को समझाया।

भीलवाड़ा व्यापार मंडल के सदस्य पूज्यप्रवर की सन्निधि में पहुँचे। पूज्यप्रवर ने उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया। जैविभा प्रतिनिधियों ने 'निर्मावली' का एक आगम जो साध्वी मुदितयशा जी द्वारा संपादित है, पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में विमोचन हेतु प्रस्तुत किया। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया कि आज यह आगम आया है, इसमें आचार्यों का तो क्या कहें, पर साध्वी मुदितयशा जी का अच्छा योगदान रहा है।

मुख्य नियोजिका जी ने स्वाध्याय के भेदों का विस्तार से विवेचन किया।

भीलवाड़ा ट्रेड फेडरेशन के अध्यक्ष दामोदरदास अग्रवाल व न्यू क्लॉथ मार्केट के अध्यक्ष गौतम जैन ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। व्यवस्था समिति से प्रकाश सुतरिया ने सभी का स्वागत किया।

साध्वी मुदितयशा जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आरंभ और परिग्रह छोड़ने से प्रशस्त होता है आत्मकल्याण का मार्ग : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ९ नवंबर, २०२१

संबोधि प्रदाता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने ज्ञान पंचमी-लाभ पांचम के अवसर पर अमृत ज्ञान रूपी वर्षा करते हुए फरमाया कि सूयगड़ो आगम में शास्त्रकार ने बताया है कि कई बार आदमी अपने माता-पिता से पहले ही मर जाता है। यह संसार की एक स्थिति है कि जो बाद में जन्में थे, वो पहले चले जाते हैं।

दूसरी बात बताई है कि आगे सुमति भी सुलभ नहीं है। आदमी मर तो गया पर कहाँ पैदा होगा? कितने जीव दुर्गति में चले जाते हैं। चार ज्ञान चौदह पूर्व के धारक भी नरक निगोद में चले जाते हैं। यह स्थिति जीवन की बन सकती है, यह भय देखकर आदमी हिंसा से विरत हो। आरंभ और परिग्रह से विरत हो जाए।

आरंभ और परिग्रह ये दो तत्त्व नरक में ले जाने वाले हैं। नरक गति के बंध के कारण हैं—महाहिंसा और महापरिग्रह। साधु अपने महाव्रतों के लिए जागरूक रहे। गृहस्थ हैं वे ध्यान दें कि मैं आरंभ से कितना विरत हो सकता हूँ। परिग्रह को कितना कम कर सकता हूँ। जीवन में

जितना त्याग बढ़ता है, वो हमारी एक आध्यात्मिक संपदा हो जाती है।

श्रावक के बारह व्रत हैं, एक त्याग की साधना है। उसके आगे की साधना मैंने बताई है—सुमंगल-साधना। संयम की और मजबूत साधना सुमंगल साधना है। सुमंगल साधना के नियम बताकर ग्रहण करने की प्रेरणा दी। इससे जीवन में त्याग और अधिक त्याग हो जाता है। त्याग जितना बढ़ेगा वो आगे के लिए एक अच्छी स्थिति बनाने में निमित्त बन सकेगा। आत्मा की स्थिति अच्छी हो, भव भ्रमण कम हो, आदमी ये भावना रखे।

छोटी-छोटी बात में आदमी ध्यान दे कि हिंसा से बचाव हो। पंचेन्द्रिय प्राणी की हत्या तो गृहस्थ में होनी भी नहीं चाहिए। प्राणी की हत्या न हो। अपनी सुरक्षा के लिए उसे दूर छोड़ा जा सकता है। जमीकंद भक्षण से जितना हो सके बचें, त्याग रखें। यह एक प्रसंग से समझाया कि विवेक से हिंसा से बचा जा सकता है। मन में अहिंसा का भाव रहे।

परिग्रह में जितना अल्पीकरण हो सके, करें। परिग्रह के अर्जन में अहिंसा, नैतिकता, प्रामाणिकता रह सके, ऐसा प्रयास हो। धर्म के मार्ग पर बढ़ें, हिंसा से बचें यह भी एक प्रसंग से समझाया कि कूट तोल-माप से तिर्यन्च गति का बंध हो सकता है। आरंभ-परिग्रह छोडो, आत्म-कल्याण में लगें। आत्मा का उत्थान हो सकेगा।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि हर व्यक्ति ज्ञान बढ़ाना चाहता है। ज्ञान बढ़ाने का साधन है—प्रश्न पूछना।

साध्वीवर्या जी ने फरमाया कि हम अनावश्यक बोलने से बचें। ऊँची भाषा बोलें। भाषा मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

✦ अपना घर भरने के लिए व्यापार के माध्यम से लोभवश किसी के साथ धोखा करना गलत होता है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

अनेकांतवाद कार्यशाला का आयोजन

रोहिणी, दिल्ली।

अभातेममं द्वारा निर्देशित एवं दिल्ली महिला मंडल द्वारा आयोजित अनेकांतवाद कार्यशाला का आयोजन शासनश्री रतनश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन रोहिणी में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण द्वारा किया।

शासनश्री साध्वी रतनश्री जी एवं साध्वी सुब्रताजी ने अपने उद्बोधन में अनेकांतवाद को सरल शब्दों में समझाया। मोटिवेशनल स्पीकर संस्कृति भंडारी ने प्रभु महावीर की वाणी व अनेकांतवाद के महत्त्व को सरलता से समझाया।

जैन तत्त्वज्ञान तेरापंथ दर्शन के २०१९-२०२१ के सार्टिफिकेट वितरित किए गए। अध्यक्ष मंजु जैन, निवर्तमान अध्यक्ष निर्मला कोठारी, कोषाध्यक्ष प्रेम भंसाली, जैन तत्त्वज्ञान में तेरापंथ दर्शन दिल्ली की प्रभारी कमला भंसाली व अन्य पदाधिकारी, रोहिणी संयोजिका, उपसंयोजिकाएँ आदि बहनों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन रोहिणी की संयोजिका कुसुम खटेड़ ने किया। आभार ज्ञापन प्रचार-प्रसार मंत्री प्रवीणा सिंघी ने किया।

नववधू सम्मेलन 'नवोदिता : नई उमंग-नई किरण' का आयोजन

मुंबई।

तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वाधान में दिग्दर्शिका विमोचन एवं नववधू सम्मेलन 'नवोदिता' नई उमंग, नई किरण का कार्यक्रम। महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल कालबादेवी में शासनश्री साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय', साध्वी प्रियंवदाजी, साध्वी प्रेरणाश्री जी, साध्वी मृदुयशा जी, डॉ० ऋद्धियशा जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। दक्षिण मुंबई, महिला मंडल द्वारा सुमधुर संगान द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति दी गई।

संयोजिका भावना धाकड़ ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। महिला मंडल अध्यक्षा रचना हिरण ने अपने भाव व्यक्त किए। चारित्रात्माओं के सान्निध्य एवं सभी पूर्वाध्यक्ष की गरिमामय उपस्थिति में दिग्दर्शिका का विमोचन किया गया। विमोचनकर्ता सरला लिंगा का सम्मान किया गया। दिग्दर्शिका के संपादन में विशेष श्रम नियोजित करने वाले अनिता सिंयाल एवं शीला चंडालिया को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में लगभग १२५ नववधूओं ने अपनी सहभागिता दर्ज करवाई। सभी नववधुओं के परिचय सत्र रखा गया, जिसका संचालन मुंबई सहमंत्री संगीता चपलोत ने किया। दक्षिण मुंबई द्वारा वधुओं के लिए गेम्स का भी आयोजन किया गया। जज की भूमिका पूर्वाध्यक्ष कुमुद कच्छारा एवं सुनीता परमार ने निभाई। साध्वी प्रियंवदा जी, शासनश्री साध्वी विद्यावती जी ने उद्गार व्यक्त किए।

अभातेममं द्वारा २०१९ से २०२१ के कार्यकाल के लिए मुंबई महिला मंडल को प्रदत्त १४ सम्मान हेतु सभी विजेताओं को सम्मानित कर अभिनंदन किया गया। नवोदिता कार्यक्रम की संयोजिका संगीता चपलोत एवं दक्षिण मुंबई महिला मंडल टीम के अथक श्रम से कार्यक्रम का सफल आयोजन हुआ। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल मंत्री अल्का मेहता ने किया। आभार ज्ञापन मुंबई महिला मंडल के उपाध्यक्ष विमला कोठारी ने किया। आचार्य महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउंडेशन का विशेष योगदान प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में लगभग ५०० बहनों की सराहनीय उपस्थिति रही।

'सफर संकल्प से सफलता तक' कार्यशाला

विशाखापटनम।

अभातेममं के तत्त्वावधान में विशखापटनम महिला मंडल द्वारा 'सफर : संकल्प से सफलता तक' कार्यशाला आयोजित की गई। यह आंध्र प्रदेश तेलंगाना एवं दक्षिण ओडिशा स्तरीय कार्यशाला थी। विषय था—'कैसे छुए आसमां को' राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम ने अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया हमें अपना विजन डिसाइड करना चाहिए। हमारी क्षमता को पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है। सफलता में आने वाली रुकावटों को हम अपनी संकल्प शक्ति से ही पार कर सकते हैं।

राष्ट्रीय महामंत्री मधु देरासरिया ने बताया कि हमें सही दिशा में अपने श्रम को नियोजित करना होगा। मुख्य अतिथि गौतम चोरड़िया ने आत्म प्रगति के सूत्र देते हुए बताया कि दूसरों को बदलने से पहले स्वयं को बदलना चाहिए, हम अपने बच्चों को संस्कारी बनाएँ ताकि उनके चहुँमुखी विकास से उनका भविष्य उज्ज्वल हो, हमें साफ नियत के साथ विवेक भी रखना चाहिए।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने बताया कि जीवन में छोटे-छोटे संकल्पों को अपनाकर हम बड़े लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं।

तेरापंथ कन्या मंडल स्वप्न कार्यशाला

मैसूर।

तेममं के तत्त्वावधान में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेरापंथ कन्या मंडल ने स्वप्न विषयक कार्यशाला का आयोजन किया। जिसका विषय रहा—'स्वप्न की दुनिया को जानें'। कार्यक्रम में महिला मंडल की अध्यक्षा मंजु दक, मंत्री वनीता बाफना, विजयलक्ष्मी आच्छा, विजयलक्ष्मी भटेवरा, कन्या मंडल प्रभारी संतोष कोठारी एवं जेसीआई ट्रेनर लीला कोठारी की मुख्य अतिथि के रूप में गरिमामय उपस्थिति रही।

कार्यशाला का प्रारंभ तेरापंथ कन्या मंडल, मैसूर के मंगलाचरण से हुआ। गीत का संगान किया गया। संतोष कोठारी ने स्वागत भाषण देते हुए अतिथियों का सम्मान किया।

साध्वी राजुलप्रभा जी एवं साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने मुख्य वक्ता के रूप में विषय को प्रस्तुत किया। स्वप्न क्या, क्यों, स्वप्न फल, हमारा व्यक्तित्व एवं रोगोपचार, स्वप्न एवं मंत्र प्रयोग आदि विविध विषयों पर रोचक प्रस्तुति दी। साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने वैज्ञानिक आधार पर स्वप्न को सत्य में बदलने के टिप्स बताकर ज्ञानवर्धन किया। साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कन्याओं को दृष्टि प्रदान करते हुए अपने उद्गार व्यक्त किए।

मोक्षी पितलिया ने 'मिस जैन कम्पिटीशन' का संचालन किया, जिसमें मिस जैन-२०२१ सेजल बुरड़ बनी। जिसे उपहारों से प्रोत्साहित किया गया। आभार ज्ञापन महिला मंडल की मंत्री वनीता बाफना ने किया। कार्यक्रम का संचालन सुनिधि मेहता ने किया।

कंफर्ट जोन से निकल चेलेंज को करें स्वीकार

साहुकारपेट, चेन्नई।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेममं के तत्त्वावधान में कन्या मंडल द्वारा जैन कन्या सम्मेलन का आयोजन हुआ। उत्कर्ष कार्यक्रम में कन्याओं की उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा को शतगुणित कर दिया। साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि कन्या परिवार का आभूषण है। कन्या दो परिवारों को जोड़ने वाला सेतु है। कन्या को संस्कारी बनाना दो परिवार के गौरव को अभिवर्द्धित बनाने वाला घटक तत्त्व है। साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि चेन्नई का महिला मंडल सक्रिय एवं उत्साही है। काम करने की उमंग है। अध्यक्ष पुष्पा एवं मंत्री रीमा अपनी पूरी टीम के साथ कर्तव्य के नए पद्चिह्न अंकित कर रही हैं। जैन महिला सम्मेलन एवं जैन कन्या सम्मेलन का आयोजन कर पूरे जैन समाज में तेममं की गरिमा को अभिवर्द्धित किया है। कन्या मंडल प्रभारी प्रीति डूंगरवाल एवं सहप्रभारी वंदना पगारिया तथा कन्या मंडल संयोजिका भावि बाफना एवं सह-संयोजिका दिशा बाफना, हार्दिका मूथा सभी चिंतनशील व श्रमशील हैं।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा कि शिखर का स्पर्श वही कर सकता है, जो सहन करता है, श्रम करता है, सेवा करता है, वह अपने जीवन के हर क्षेत्र में, हर मोड़ पर कामयाब होता हैं साध्वी डॉ० सुधाप्रभा जी ने कहा यह कन्या, नारी जाति के उज्ज्वल भविष्य को पूरा करने का जिनके दिमाग में फौलादी संकल्प है।

साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने मंच का संचालन किया। साध्वी समत्वयशा जी ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य माला कातरेला की उपस्थिति रही। अध्यक्ष पुष्पा हिरण ने अपने भाव व्यक्त किए। सम्मेलन में कन्याओं का स्वागत भवि बाफना ने किया एवं वंदना पगारिया ने भाव प्रस्तुत किए। फेमिना नेशनल कन्वीनर याशिका खटेड के वक्तव्य ने सबको मोटिवेट किया। मंत्री रीमा सिंघवी ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

प्राक् संचालन कन्या मंडल प्रभारी प्रीति डूंगरवाल ने किया। कन्याओं द्वारा मंगल संगान की प्रस्तुति दी गई तथा नाटिका का मंचन किया गया तथा दृष्टि नाहटा ने ब्लाइंड फोल्ड एक्ट किया। एलईडी के माध्यम से प्रजेंटेशन प्रस्तुत किया गया। साध्वीश्रीजी द्वारा प्रदत्त मंगलपाठ से कार्यक्रम का समापन हुआ।

मंगलभावना समारोह

कोयंबटूर।

अभातेममं के निर्देशानुसार मुनि सुधाकर जी एवं मुनि नरेश कुमार जी के सान्निध्य में महिला मंडल के तत्त्वावधान में मंगलभावना के प्रथम रूपांतर की कार्यशाला रखी गई। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से कनकप्रभा बुच्चा द्वारा हुई, मुनिश्री ने 'श्री' शब्द, 'लक्ष्मी' और संपन्नोहं श्याम का अर्थ बताया। तत्त्वज्ञान की व्यवस्थापिका शांति मरोठी ने बहनों को २०२० परीक्षा के सार्टिफिकेट एवं मार्कशीट वितरित कराए।

अच्छी संख्या में बहनों एवं भाइयों की उपस्थिति रही। अंत में महिला मंडल अध्यक्षा मंजु गीड़िया ने सर्वप्रथम मुनिश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की एवं कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु सहयोग देने वाली बहनों का आभार व्यक्त किया।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

सत्र 2021-23

✻ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✻ श्री अशोक श्रेयांस बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	11,00,000
✻ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✻ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✻ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✻ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✻ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✻ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000

जैन विद्या कार्यशाला सम्मान समारोह

रायपुर।

मुनि दीपकुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ अमोलक भवन में तेरापंथ युवक परिषद द्वारा जैन विद्या कार्यशाला तीन बातें ज्ञान की, का प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार का वितरण किया गया। रायपुर में कुल ६ प्रतिभागियों ने परीक्षा दी, जिसमें से एक प्रतिभागी ने पूरे भारतवर्ष में २२वाँ स्थान प्राप्त किया।

बाल संस्कार निर्माण शिविर

मैसूर।

तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में मैसूर क्षेत्रीय एक दिवसीय 'बाल संस्कार निर्माण शिविर' का आयोजन हुआ। इस अवसर पर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि ज्ञानशाला के द्वारा बच्चों में सद्-संस्कार जागृत किए जाते हैं। प्रशिक्षिकाएँ और अभिभावकों का परम सहयोग भावी कर्णधारों का निर्माण करते हैं। उन्होंने कहा कि ज्ञानशाला आचार्य तुलसी की महत्त्वपूर्ण देन है।

कार्यक्रम का मंगलाचरण क्षेत्रीय ज्ञानार्थियों ने किया। सभी पदाधिकारीगण, अतिथिगण, ज्ञानशाला परिवार की एक छोटी-सी रैली भी रही। महासभा सहमंत्री प्रकाश लोढ़ा ने शिविर उद्घाटन घोषणा की एवं श्रावक निष्ठापत्र का वाचन किया। ज्ञानशाला, मैसूर संयोजिका अनिता कटारिया ने स्वागत भाषण दिया। मैसूर ज्ञानार्थियों ने परिषद का स्वागत किया। Special mind reading show द्वारा मुदित बरलोटा और दीया बरलोटा ने कार्यक्रम को रोचक बना दिया। बच्चों ने Yoga deno द्वारा कलाकृति दिखाई, ज्ञानशाला, मैसूर के इतिहास पर डॉक्यूमेंटरी दिखाई गई। साध्वीवृंद ने गीतिका गाई।

साध्वी शौर्यप्रभा जी ने अपने विचार व्यक्त किए। सभी प्रशिक्षिकाओं ने भी गीतिका गाई। क्षेत्रीय ज्ञानशाला परिवार द्वारा ज्ञान मेले का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बच्चों द्वारा ११ सांस्कृतिक, मोहक एवं ऐतिहासिक प्रस्तुतियाँ दी गई। सभी बच्चों को पुरस्कृत भी किया गया। इस अवसर पर सभाध्यक्ष शांतिलाल कटारिया, अणुव्रत समिति अध्यक्ष शांतिलाल नौलखा, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा मंजु दक, तेयुप अध्यक्ष विक्रम पितलिया ने विचार व्यक्त किए। इस शिविर में मैसूर, मंड्या, श्रीरंगपट्टणा, नंजनगुड, पांडवपुरा, हुंसूर, एचडी कोटे की ज्ञानशाला से ५० प्रशिक्षिकाएँ एवं १७५ बच्चे उपस्थित रहे। शिविर में ज्ञानशाला प्रभारी महावीर देरासरिया, नेमीचंद बडोला, अमरचंद दक, व्यवस्थापक नवीन देरासरिया, संदीप सामरा, क्षेत्रीय संयोजिका रेखा पितलिया भी उपस्थित रही। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने किया। आभार ज्ञापन मुख्य प्रशिक्षिका खुशी गुगलिया ने किया।

धर्मसंघ के आठ आचार्यों की जीवन-दर्शन प्रश्नोत्तरी

राजाराजेश्वरी नगर।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने तेरापंथ धर्मसंघ के आठ आचार्यों की जीवन-दर्शन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में संभागी श्रावक-श्राविकाओं को उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा कि भगवान महावीर की वाणी है—ज्ञान की आराधना से आत्म तत्त्व, कर्म बंधन, कर्म मुक्ति का साधन, उत्तम जीवनशैली आदि-आदि का ज्ञान प्राप्त होता है। इसके लिए स्वाध्याय उत्तम साधन है। तीर्थंकरों एवं आचार्यों का जीवन चरित्र का स्वाध्याय आत्म विकास का मार्ग है।

तेरापंथ महिला मंडल के माध्यम से प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में बहुत बड़ी संख्या में भाई-बहन जुड़े। तीर्थंकर भगवान के प्रतिनिधि आचार्यों के जीवन को आपने पढ़ा। उनके जीवन से प्रेरणा लें। साध्वीश्री जी ने मेघ मुनि के उदाहरण से तत्त्व समझाया।

कार्यक्रम की शुरुआत शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने नमस्कार महामंत्र के द्वारा की। महिला मंडल की बहनों ने महावीर अष्टकम से बहुत मंगलाचरण किया। शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने स्वाध्याय के बारे में बताया। अध्यक्ष लता बाफना ने सभी का स्वागत करते हुए आचार्यों के जीवनी के प्रश्नपत्र के परिणाम घोषित किए।

प्रथम स्थान पर शारदा बैद, पारस सेठिया, द्वितीय स्थान पर हेमलता सुराणा, ममता दुगड़ तथा तृतीय स्थान पर विजयलक्ष्मी मणोत रही। प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले सभी भाई-बहनों को पुरस्कार एवं सभी संभागी भाई-बहनों को सांत्वना पुरस्कार दिया गया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री सीमा छाजेड़ ने एवं आभार सहमंत्री हेमलता सुराणा ने व्यक्त किया।

ज्ञान विकास का प्रथम द्वार

विजयनगरम्।

'तीन बातें ज्ञान की' पुस्तक पर आयोजित कार्यशाला में विजेता को तेयुप द्वारा सम्मानित किया गया। मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी ने कहा कि ठाणं सूत्र पर आधारित तीन बातें ज्ञान की आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा लिखित पुस्तक में सरल व विस्तार में बताया गया है। पुस्तक से गहन ज्ञान का विकास होता हैं ज्ञान से विकास का रास्ता खुलता है।

मुनि प्रशांत कुमार जी ने सरल तरीके से 'तीन बातें ज्ञान की' पुस्तक का बोध दिया। तेयुप अध्यक्ष राकेश सेठिया ने बताया कि विजयनगरम् से कार्यशाला में परीक्षा देकर अखिल भारतीय स्तर पर ९८:५ प्रतिशत मीता सुराणा, ९७ प्रतिशत विनीता सुराणा ने प्राप्त किए। जिन्हें विशेष रूप से सम्मानित किया गया। अन्य परीक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यशाला के संयोजन में अभिषेक चोपड़ा का सहयोग प्राप्त हुआ। सम्मान समारोह कार्यक्रम का संचालन विनीत आंचलिया ने किया।

विकास पुरुष के पर्याय थे आचार्यश्री तुलसी

गदग।

शासनश्री साध्वी पद्मावती जी के सान्निध्य में भाईदूज आचार्यश्री तुलसी का १०८वाँ जन्मदिवस अणुव्रत दिवस के रूप में मनाया गया। शासनश्री साध्वी पद्मावती जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी उस व्यक्तित्व का नाम है जिसकी ख्याति राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय दोनों क्षेत्रों में व्याप्त हो चुकी है। आचार्यश्री तुलसी उस विकास पुरुष का नाम है, जिसके कण-कण में जवानी का जोश उभरता रहा।

डॉ० साध्वी गवेषणाश्री जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी क्रांतिकारी आचार्य थे। तेरापंथ धर्मसंघ को सात समुद्रों पार पहुँचाया है। उनका फौलादी संकल्प अटूट था। साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी गति, ऊर्जा और प्रकाश के पर्यायवाची थे।

साध्वी दक्षप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका से अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी मेरूप्रभा जी ने कार्यक्रम का संचालन किया। सभा अध्यक्ष अमृतलाल कोठारी, उपासिका विमला कोठारी, महिला मंडल की अध्यक्षा प्रेमाबाई कोठारी, लातूर से समागत राजकुमारी गटागट, तनीषा गटागट ने भावाभिव्यक्ति दी।

जितेंद्र जीरावला, उपासिका सारिका संकलेचा, परीक्षा व्यवस्थापक देवराज भंसाली, तेयुप अध्यक्ष दिनेश संकलेचा, लालचंद भंसाली, दीपचंद भंसाली, कीर्तन संकलेचा, गौतम जीरावला, संगीता संकलेचा, लीला देवी गांधी मेहता ने विचार रखे। धम्म जागरणा रखी गई। जिसमें कांतिलाल भंसाली, खीमराज भंसाली, सुशीलाबाई जीरावला आदि के मधुर स्वर ने भवन को तुलसीमय बना दिया।

जैन संस्कार विधि

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि - अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

पूर्वांचल-कोलकाता।

चुरू निवासी, उत्तर हावड़ा प्रवासी विवेक-उषा बांठिया के पुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि द्वारा अभातेयुप संस्कारक विजय कुमार बरमेचा द्वारा खेमचंद सिंघी के निवास स्थान पर संपादित करवाया। कार्यक्रम में उपस्थित थे परिषद के उपाध्यक्ष व जैन संस्कार विधि के प्रभारी धर्मेन्द्र बुच्चा, संयोजक हर्ष खटेड़ व पारिवारिकजन।

जैन संस्कार विधि के प्रभारी धर्मेन्द्र बुच्चा ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

नामकरण संस्कार

गंगाशहर।

गंगाशहर निवासी संजय-अरुणा रांका के नवजात पुत्ररत्न का नामकरण संस्कार, जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ। कार्यक्रम में अभातेयुप संस्कारक धर्मेन्द्र डाकलिया व देवेंद्र डागा ने विधिपूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार सहित जैन संस्कार विधि से नामकरण का कार्यक्रम करवाया। इस कार्यक्रम में विपिन बोथरा, कमलेश रांका और किशोर मंडल साथी रौनक चोरड़िया भी सहयोगी के रूप में उपस्थित रहे।

नूतन गृह प्रवेश

राजराजेश्वरी नगर।

हनुमानमल-सौभाग्यदेवी चोरड़िया के नूतन निवास के गृह प्रवेश का कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संपन्न हुआ। नूतन गृह प्रवेश का कार्यक्रम मुख्य संस्कारक राकेश दुधोड़िया एवं सह-संस्कारक दिनेश मरोठी ने पूरे विधि-विधान से संपन्न करवाया।

परिवार से डिंपल ने परिषद के प्रति आभार व्यक्त किया। परिषद की ओर से परिवारजनों को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया। कार्यक्रम में तेयुप, राजराजेश्वरी नगर के अध्यक्ष सुशील भंसाली, उपाध्यक्ष धर्मेश नाहर एवं अन्य पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

रायपुर।

प्रमोद सेठिया परिवार के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक सूर्य प्रकाश बैद ने संपन्न करवाया। सुमित जैन ने तिलक व मोली बांधी, संस्कारक ने अनेक मंत्रोच्चार के साथ लोगस्स पाठ का ध्यान मुद्रा में उच्चारण किया। सेठिया परिवार की ओर से संस्कारक व तेयुप रायपुर की पूरी टीम के प्रति आभार व्यक्त किया।

नामकरण संस्कार

साउथ कोलकाता।

दुबई प्रवासी प्रतीक एवं प्रेरणा दुगड़ के पुत्र का नामकरण संस्कार का पूजन जैन संस्कार विधि से संपन्न हुआ। अभातेयुप के संस्कारक राजेंद्र बैंगानी ने कार्यक्रम संचालित किया।

तेयुप का प्रतिनिधित्व अध्यक्ष अमित पुगलिया एवं सचिव रोहित दुगड़ ने किया। कार्यक्रम में दोनों पक्ष के पारिवारिक सदस्य उपस्थित थे।

नूतन गृह प्रवेश

अहमदाबाद।

डॉ० धवल अरविंद दोशी का जैन संस्कार विधि से नूतन गृह प्रवेश करवाया गया। संस्कारक डालिमचंद, विक्रम दुगड़ एवं अपूर्व मोदी ने मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ मंगलभावना पत्रक स्थापित कर गृह प्रवेश विधि को संपादित किया।

परिषद की ओर से दोशी परिवार को प्रशस्ति-पत्र के साथ मंगलभावना पत्र भेंट किया। दोशी परिवार से धवल एवं अरविंद दोशी ने तेयुप एवं संस्कारकों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

✦ *प्रवृत्ति को छोड़ना कठिन है, परंतु प्रवृत्ति में होने वाली आसक्ति को छोड़ा जा सकता है। फिर प्रवृत्ति तुम्हारी आत्मा को मलिन बनाने वाली नहीं बनेगी।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

❑ **आचार्य तुलसी** ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

उपसंपदा के सूत्र

(क्रमशः) पहला सूत्र है मिताहार–आहार का संबंध शरीर से है और शरीर का मन से। मन को साधने के लिए शरीर को साधना बहुत जरूरी है। शरीर के लिए भोजन जितना आवश्यक है, भोजन का संयम उससे अधिक आवश्यक है। बहुत बार व्यक्ति भूखा रहकर जितना अहित नहीं करता, अधिक खाकर कर लेता है। अति भोजन ध्यान की सबसे बड़ी बाधा है। एक साधक खाद्य-संयम रखकर किसी भी समय ध्यान की गहराई में उतर सकता है। इसके विपरीत अधिक खाने के बाद ध्यान के अनुकूल मनःस्थिति भी तैयार नहीं होती। अधिक भोजन करने का परिणाम है–आलस्य और निद्रा। ध्यान जागरूक चेतना का प्रतीक है। इस दृष्टि से साधक का भोजन जितना सादा, सात्त्विक और सीमित होता है, साधना में उसे उतनी ही सुविधा प्राप्त हो जाती है।

उपसंपदा का दूसरा सूत्र है–मितभाषण। बोलना सामूहिक जीवन की एक अपेक्षा है। क्योंकि यह भावाभिव्यक्ति का एक माध्यम है। व्यक्ति अकेला रहे तो उसे किसी के साथ बात करने का अवसर ही नहीं मिलता, वह सहज मौनी हो जाता है। एक नवजात बच्चे को एकदम अकेला रखा जाए तो वह बोलना सीख ही नहीं सकता। बोलने का अर्थ ही तब है जब व्यक्ति के पास दूसरा कोई सुनने वाला हो। सामूहिक जीवन में भी बोलना जितना आवश्यक है, मौन उससे भी अधिक आवश्यक है। साधना की गहराई में उतरने के लिए तो केवल बाहर से ही नहीं, भीतर से भी मौन होना आवश्यक है। पर यह मनुष्य की दुर्बलता है कि वह आवश्यकता से अधिक बोलता है। जहाँ एक शब्द या वाक्य से काम चल सकता है, वहाँ दस शब्दों या वाक्यों का प्रयोग समय और शक्ति–दोनों का अपव्यय है।

प्रेक्षाध्यान का साधक ध्यान से अतिरिक्त समय में भी पूर्ण मौन का अभ्यास करे, यह बहुत अच्छी बात हैं पर मौन स्वीकार करने के बाद भी संकेतों से बात करते रहना अधिक लाभप्रद नहीं है। इस क्रम में उतनी शक्ति का व्यय होता है, जितना बोलने से भी नहीं होता। इसलिए साधक को पूर्ण मौन का नहीं तो मितभाषिता का अभ्यास अवश्य होना चाहिए। मितभाषिता का मानदंड यही है कि व्यकित बोलने से पहले दो क्षण रुककर सोच ले कि कितना बोलना आवश्यक है? अथवा बोलने के बाद वह यह समझने का प्रयास करे कि अभी उसके द्वारा जो बात कही गई है, वह नहीं कही जाती तो कौन-सा काम रुकने वाला था। इस प्रकार विचारपूर्वक बोलना, बोलने के लिए कैसी भाषा का उपयोग करना, जोर से बोलना या धीरे बोलना आदि कई पहलू हैं जो मितभाषिता का स्पर्श करते हैं। साधक अपने विवेक का जागरण का अनपेक्षित भाषण से अपना बचाव कर सकता है।

उपसंपदा का तीसरा सूत्र है–मैत्री। मैत्री का पौधा समता के धरातल पर ही हरा-भरा रह सकता है। इसमें विश्वात्मा के साथ तादात्म्य स्थापित करने की क्षमता हैं ध्यान-साधक के मन को राग-द्वेष की तरंगें जितना प्रभावित रखेंगी, उसकी साधना उतनी ही कम होगी। राग और द्वेष दोनों मैत्री भावना में बाधक हैं। कोई व्यक्ति किसी एक व्यक्ति या वस्तु के प्रति अपना अधिक अनुराग रखता है तो दूसरे व्यक्ति या वस्तु के प्रति उसका विद्वेष होना स्वाभाविक है। द्वेष की तरंगों का स्पष्ट आभास न मिलने पर भी उसके अस्तित्व को नकारने का हमारे पास कोई हेतु नहीं है। इसी प्रकार विराग के समानांतर राग की तरंगें प्रवाहित होती रहती हैं। ऐसी स्थिति में 'मैत्री' एक ऐसी दिशा है जो राग और द्वेष–दोनों को क्षीण करती हुई व्यक्ति को वीतरागता की ओर अग्रसर करती है। प्रेक्षाध्यान की साधना करने वाले को मैत्री की भावना से भावित होना ही होगा, अन्यथा उसका ध्यान आत्मस्पर्शी नहीं हो सकता।

उपसंपदा का चौथा सूत्र है–प्रतिक्रियाशून्य-क्रिया। मनुष्य का यह स्वभाव बन गया है कि वह प्रतिक्रिया में जीता है। सुबह से शाम तक उसकी अधिकांश प्रवृत्तियाँ प्रतिक्रियास्वरूप होती हैं। प्रतिक्रियाओं में जीने वाला व्यक्ति जीवन की सहजता को खो देता है। उसे यह ज्ञात ही नहीं रहता कि वह अमुक काम क्यों कर रहा है? किसी व्यक्ति ने किसी दूसरे व्यक्ति को गाली दी। गाली देने का कोई अर्थ या औचित्य हो या नहीं, गाली सुनने वाला उसकी प्रतिक्रिया से मुक्त नहीं रह पाएगा। किसी व्यक्ति ने किसी का हित या अहित कर दिया, दोनों क्रियाओं की सीधी प्रतिक्रिया होती है। हितैषी के प्रति हितावह और द्वेषी के प्रति द्वेष की भावना जाग जाती है। यह एक प्रकार की पंगुता है। मनुष्य अपने स्वतंत्र चिंतन के आधार पर कोई भी काम नहीं कर सकता। उसके सामने जैसी परिस्थितियाँ होती हैं, उनसे हटकर कुछ सोचने का या करने का प्रसंग ही नहीं आता। ऐसी स्थिति में प्रतिक्रिया-हीन जीवन जीना बहुत बड़ी साधना है। कितनी ही कड़ी क्यों न हो साधना, जब तक यह नहीं सधती है, प्रेक्षाध्यान का वांछित परिणाम नहीं आ सकता। साधक को प्रतिदिन यह अभ्यास करना चाहिए कि वह प्रतिक्रियाओं से मुक्त कैसे रह सकता हैं अभ्यासकाल में ही परीक्षण होता रहे तो साधना के परिणाम की अवगति मिलती रहती है। यह परीक्षण किसी दूसरे के द्वारा न होकर अपने द्वारा ही हो, यह भी आवश्यक है। जो व्यक्ति प्रतिक्रियाओं से अप्रभावित रहना सीख लेता है, वह सही अर्थ में ध्यान का अधिकारी होता है।

उपसंपदा का पाँचवाँ सूत्र है–भावक्रिया। भावक्रिया का संबंध जीवन की प्रत्येक क्रिया के साथ है। छोटी-से-छोटी और बड़ी-से-बड़ी कोई भी क्रिया साधक की अजानकारी में न हो। भावक्रिया का अर्थ है–जिस समय जो काम करे, उसी में लीन हो जाना, अपने अस्तित्व को उससे भिन्न नहीं रखना। तच्चित्तता, तन्मयता, तदर्थोपयुक्तता आदि शब्द भावक्रिया के ही प्रतीक हैं। बहुत बार यह होता है कि व्यक्ति काम तो कुछ करता है और उसका मन कहीं और रहता है। भावक्रिया की साधना न होने से ऐसी स्थिति बनती है। इसमें मन, वाणी और कर्म तीनों समन्वित नहीं रह सकते। जिस क्रिया के साथ मन का योग न हो, वह क्रिया मूर्च्छा का प्रतीक है।

एक बार महात्मा बुद्ध के ललाट पर एक मक्खी आकर बैठ गई। महात्मा का हाथ अनायास ही उठा और मक्खी उड़ गई। दो क्षण बाद बुद्ध ने सलक्ष्य हाथ ऊपर उठाया और मक्खी उड़ाने की मुद्रा में उसको घुमा दिया। पास ही बुद्ध के कुछ शिष्य बैठे थे। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। उनमें से एक शिष्य बोला–'भगवन्! यह आप क्या कर रहे हैं? अभी तो कोई मक्खी या मच्छर नहीं है, किसे उड़ाने के लिए आपको यह कष्ट करना पड़ रहा है?'

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा** ❑

(३३)

सूर्य से भी अधिक जिसकी है प्रभा अनमोल।
कर दिया रोशन हृदय को द्वार उसके खोल।।

सृजन की चंचल तरंगों से अमित अनुराग
प्राप्त होता है अनवरत भक्तिपुष्प-पराग
तिमिर तट पर तेज का वैभव लिए चुपचाप
कर रहा आकृष्ट जिसका विमल विपुल विराग
उस मनस्वी चिर यशस्वी का अमल अभिषेक
उतर आए मौन आस्था के अधर पर बोल।।

देखता सपने सुनहरे जो नए दिन-रात
ज्योति-किरणों से खिला पुलकन भरा यह प्रात
आज वह दिन जब लिया उसने अकल्पित मोड़
सब दिशाएँ कर रहीं नत हो उसे प्रणिपात
संतुलन तप त्याग पौरुष और करुणाभाव
इन विलक्षण अतिशयों को कौन सकता तोल।।

ओढ़कर दायित्व गण का जो बना अभिराम
छोड़कर आराम को गति कर रहा अविराम
समय भी स्पर्धा कर जिसको न पाए जीत
खोलता ही जा रहा जो नित नए आयाम
है सृजन की चेतना फिर भी विसर्जन बात
इस विशद सापेक्षता का कौन आँके मोल।।

करिश्मा कर्तृत्व का पर हम सभी अनजान
कर सकें कैसे समय पर सत्य का संधान
विश्व इस नेतृत्व में युग-युग रहे गतिमान
उगे शत शरदों शुभंकर सुखद स्वर्ण विहान
मधुर से भी मधुरतर हो मधुरतम हर याम
कर अनुग्रह जिंदगी में अब सुधा दे घोल।।

(३४)

आज तक गाया नहीं जो गीत ऐसा गुनगुनाऊँ।
आज तक पाया नहीं उपहार ऐसा मैं सजाऊँ।।

गुजरते हो जिस गली में तुम वही आबाद होती
देख तुमको मुस्कराती मनुज की हर आँख रोती
सफल सार्थक जिंदगी को कर रहे पुरुषार्थ-बल से
निखरते रहते सदा ज्यों सीप का नवजात मोती
ज्योति तुम देते रहो तो राह अपनी खुद बनाऊँ।।

मौन की मसि को कलम जब शब्द की अवगाह लेती
नए चिंतन को सदा नूतन सृजन की राह देती
दे रहा दस्तक न जाने कौन मेरे द्वार पर यह
छोड़ चिंता व्यर्थ की अब मैं स्वयं की थाह लेती
कल्पना के बीज बोकर खेत सपनों का उगाऊँ।।

लग रहा है आज घर-घर में अनूठा एक मेला
जग रही जन-जन हृदय में रातरानी और बेला
पर्व की शुचिता सहज ही दे रही उम्मीद युग को
आ रहा बहकर क्षितिज से रोशनी का एक रेला
इस गुलाबी पर्व पर मन के गुलाबों को खिलाऊँ।।

(क्रमशः)

संबोधि

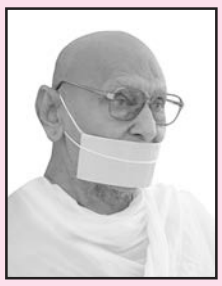

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

आज्ञावाद

भगवान् प्राह

(२०) अहिंसैव विहितोस्ति, धर्मः संयमिनो ध्रुवम्।
निषेधः सर्वहिंसाया, द्विविधा वृत्तिरस्य यत्।।

संयमी पुरुष के लिए अहिंसा धर्म ही विहित है और सब प्रकार की हिंसा वर्जित है। संयमी की वृत्ति दो प्रकार की होती है–अहिंसा का आचरण, यह विधेयात्मक वृत्ति है। हिंसा का वर्जन, यह निषेधात्मक वृत्ति है।

संयमी व्यक्ति की अहिंसा विधेयात्मक और निषेधात्मक–दोनों है। विधेयात्मक अहिंसा को समिति कहते हैं और निषेधात्मक अहिंसा को गुप्ति। अशुभ और शुभ योग के निरोध का नाम गुप्ति है और शुभ योग में प्रवृत्त होने का नाम समिति है। गुप्ति तीन हैं–मनोगुप्ति, वाक्गुप्ति और कायगुप्ति। मुनि क्रमशः मन के अप्रशस्त और प्रशस्त योग का विरोध करे।

विधेयात्मक अहिंसा के पाँच रूप हैं–

(१) ईर्या समिति–देखकर चलना, विधिपूर्वक चलना।
(२) भाषा समिति–विचारपूर्वक संभाषण करना।
(३) एषणा समिति–भोजन-पानी की गवेषणा में सतर्कता रखना।
(४) आदान-निक्षेप समिति–वस्तु के लेने और रखने में सावधानी बरतना।
(५) उत्सर्ग समिति–उत्सर्ग करने में सावधानी बरतना।

समिति में अशुभ का निरोध और शुभ में प्रवर्तन है। गुप्ति में शुभ का भी निरोध होता है। आत्मा का पूर्ण अभ्युदय निरोध से होता है।

(२१) अहिंसाया आचरणे, विधानञ्च यथास्थितिः।
संकल्पजा-निषेधश्च, श्रावकाय कृतो मया।।

श्रावक के लिए मैंने यथाशक्ति अहिंसा के आचरण का विधान और संकल्पजा-हिंसा का निषेध किया है।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

(३) चारित्र मार्ग

प्रश्न-६ : पाँच चारित्र के कितने उपभेद हो सकते हैं?

उत्तर : सामायिक चारित्र के दो भेद हैं–

(१) अल्पकालिक – यह प्रथम व अंतिम तीर्थंकरों के काल में होता है। इसकी स्थिति जघन्य ७ दिन, मध्यम ४ माह व उत्कृष्ट ६ माह होती है।
(२) यावज्जीवन – यह मध्यवर्ती बाईस तीर्थंकरों के काल में व महाविदेह क्षेत्र में होता है। इसकी स्थिति यावज्जीवन की होती है।

छेदोपस्थापनीय के दो भेद हैं–

(१) अतिचार सहित – दोषयुक्त
(२) अतिचार रहित – दोषमुक्त–तेईसवें तीर्थंकर के शासन के मुनि जब चौबीसवें तीर्थंकर के धर्मशासन में आते हैं। उनको व नवदीक्षित को यह चारित्र आता है।

परिहार विशुद्धि चारित्र के दो भेद हैं–

(१) नियट्टमाण – 'परिहार विशुद्धि' तप में संलग्न होना।
(२) नियट्टकाय – तप की पूर्णता।

सूक्ष्म संपराय चारित्र के दो भेद हैं–

(१) संक्लेसमाण – श्रेणी पतन के समय
(२) विशुद्धमाण – श्रेणी आरोहण के समय

यथाख्यात चारित्र के दो भेद हैं–

(१) छद्मस्थ – ग्यारहवें व बारहवें गुणस्थान में
(२) केवली – तेरहवें व चौदहवें गुणस्थान में

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

आचार्य वज्रस्वामी

(क्रमशः) संयमनिष्ठ श्रमणों ने एक स्वर में कहा–'भगवान्! सदोष आहार (भोज्य सामग्री) हमें किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं है। आहार अनेक बार किया है। अब अनशनपूर्वक उत्कृष्ट चारित्र धर्म की आराधना में अपने-आपको नियोजित करेंगे।'

मारणान्तिक स्थिति में भी शिष्य गण का दृढ़ आत्मबल देखकर वज्रस्वामी प्रसन्न हुए एवं विशाल श्रमण परिवार सहित वे अनशनार्थ निकटवर्ती गिरिशृंग की ओर वहाँ से प्रस्थित हुए। उनके साथ एक लघु वय का शिष्य था। बाल्यावस्था के कारण वज्रस्वामी उसे अनशन में साथ लेना नहीं चाहते थे। उन्होंने कोमल शब्दों में शिष्य से कहा–

अज्ज वि तं कच्छ लहू! अच्छसु एत्थेव ताव पुरे।।४११।।
(उपदेशमाला-विशेषवृत्ति, पृ० २१८)

–वत्स! अनशन का मार्ग बहुत कठिन है। तुम बालक हो। अब भी यहीं पुर या नगर में रुक जाओ।

आर्य वज्रस्वामी द्वारा निर्देश मिलने पर भी कष्ट-सहिष्णु उच्च अध्यवसायी बाल मुनि रुकने के लिए तैयार नहीं हुआ। अनशन-पथ की कठोरता उसे तिलमात्र भी विचलित न कर सकी।

स्वेच्छापूर्वक बाल मुनि के न रुकने पर किसी कार्य के बहाने उसे एक ग्राम में प्रेषित कर ससंघ वज्रस्वामी आगे बढ़ गए। शैल शिखर पर आरोहण कर सबने देवगुरु का स्मरण किया। शिष्यों ने पूर्वकृत दोषों की आर्य वज्र के पास आलोचना की। गिरिखंड पर अधिष्ठित देवी से आज्ञा ग्रहण कर उन्होंने यथोचित स्थान ग्रहण किया। वहीं पर वज्रस्वामी और पाँच सौ श्रमण यावज्जीवन के लिए अनशन स्वीकार कर मेरु की भाँति अकम्प समाधिस्थ बने।

कार्य-निवृत्त होकर वह शिष्य लौटा, उसे संघ का एक भी श्रमण दिखाई नहीं दिया। वह खिन्न हुआ, मन ही मन चिंतन किया–मुझे इस पंडित-मरण में गुरुदेव ने अपने साथ नहीं लिया। क्या मैं इतना निःसत्त्व, निर्वीर्य, निर्बल हूँ? कई संकल्प-विकल्पों के साथ वह वहाँ से चला। मेरे द्वारा उनके तपोयोग एवं ध्यान योग में किसी प्रकार का विक्षेप न हो यह सोच, वज्रस्वामी जिस पर्वतमाला पर अनशनस्थ हो गए थे उसी अद्रि की तलहटी में पहुँचकर तप्त पाषाण शिला पर पादोपगमन अनशन ग्रहण कर लिया। तप्त शिला के तीव्र ताप से शिशु मुनि का नवनीत-सा कोमल शरीर झुलसने लगा। भयंकर वेदना को समता से सहन करता हुआ लघुवय मुनि उन सबसे पहले स्वर्ग का अधिकारी बना। बाल मुनि की उत्तम साधना को जैनधर्म की प्रभावना का निमित्त मान देव महोत्सव के लिए आए। देवागमन देखकर वज्रस्वामी ने श्रमण संघ को सूचित किया। अत्यंत तीव्र परिणामों से भीषण ताप-लहरी को सहन करता हुआ लघुवय मुनि का अनशन पूर्ण हो गया। लघु मुनि का अनशन पूर्ण हो जाने की बात सुनकर एक ही लक्ष्य में उद्यत सभी श्रमण क्षण भर के लिए विस्मित हुए। उनके भावों की श्रेणी चढ़ी। चिंतन चला–'बाल मुनि ने स्वल्प समय में ही परमार्थ को पा लिया है। चिरकालिक संयम प्रव्रज्या को पालन करने वाले हम भी क्या अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाएँगे?' उत्तरोत्तर उनकी भावतरंगें तीव्रगामी बनती रहीं। रात्रि के समय प्रत्यनीक देवों का उपसर्ग हुआ। उस स्थान को अप्रतीतिकारी जानकर ससंघ वज्रस्वामी अन्य गिरिशृंग पर गए। वहाँ पर दृढ़-संकल्प के साथ अपना आसन स्थिर किया। मृत्यु और जीवन की आकांक्षा से रहित उच्चतम भावों में लीन श्रमण प्राणों का उत्सर्ग कर स्वर्ग को प्राप्त हुए।

अनशन की स्थिति में परम समाधि के साथ वज्रस्वामी का स्वर्गवास हुआ। विशेष प्रभावी इस घटना ने देवों को प्रभावित किया।

पाँच सौ श्रमणों सहित आर्य वज्रस्वामी की समाधिस्थली गिरिमंडल के चारों ओर रथारूढ़ इंद्र ने रथ को घुमाकर प्रदक्षिणा दी, अतः उस पर्वत का नाम रथावर्त पर्वत हो गया था।

आर्य वज्रस्वामी जैनशासन के महान् प्रभावी आचार्य थे। उनके स्वर्गगमन के साथ ही दसवें पूर्व की ज्ञान-संपदा एवं चतुर्थ अर्धनाराच नामक संहनन की क्षति जैनशासन में हुई।

(क्रमशः)

✦ वीतरागता की दिशा में गति करने के लिए प्रेक्षाध्यान का प्रयोग सहायक हो सकता है।

—आचार्यश्री महाश्रमण

ज्ञानशाला के विविध आयोजन

ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव

भुवनेश्वर।

ज्ञानशाला के वार्षिक उत्सव का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के साथ हुआ। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने मंगलाचरण किया तथा तेयुप द्वारा ज्ञानशाला सहयोगी जितेंद्र बैद ने कार्यक्रम का संचालन किया। तेयुप अध्यक्ष विवेक बेताला तथा महिला मंडल की उपाध्यक्षा संतोष सेठिया ने अपने विचार रखे। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने गीतिका नर्त्य तथा मंत्रों का उच्चारण किया।

वरिष्ठ श्रावक प्रकाश बेताला ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी की अनुपम देन है–ज्ञानशाला। भुवनेश्वर से लोकसभा सांसद अपराजिता सारंगी ने ज्ञानशाला के बारे में अपने विचार रखे तथा कहा कि यह समाज के लिए आवश्यक उपक्रम है। सभाध्यक्ष ने सांसद का स्वागत किया। लक्ष्मण महिपाल जो अग्रवाल समाज से हैं, ज्ञानशाला की प्रशंसा की तथा डिजिटल ज्ञानशाला के लिए जो भी खर्च आएगा अनुदान के रूप में देने की घोषणा की। समाज ने उनके प्रति आभार व्यक्त किया।

माहेश्वरी समाज से लालचंद मेहता, उमेश खंडेलवाल तथा अन्य जैन समाज से शुभकरण भूरा, नोरतन बोथरा आदि की उपस्थिति रही। ज्ञानशाला के बच्चों को विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं के लिए पुरस्कृत उनके ही अभिभावकों द्वारा किया गया। शिशु संस्कार बोध १ से ५ तक का रिजल्ट सुनाते हुए बच्चों को सम्मानित किया गया। नयन तारा सुखाणी ज्ञानशाला संयोजिका ने अपने विचार रखे। सभा अध्यक्ष बच्छराज बेताला ने समाज को आह्वान किया कि सद्संस्कारों के लिए अपने बच्चों को ज्ञानशाला में अवश्य भेजें तथा इससे संबंधित सभी जानकारी दी। धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

ज्ञानशाला प्रशिक्षक सम्मान समारोह

सिकंदराबाद।

शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में डी०वी० कॉलोनी तेरापंथ भवन में सभा द्वारा ज्ञानशाला प्रशिक्षिका सम्मान समारोह–'कर्तृत्व की सौरभ' का आयोजन किया गया। तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में नगरत्रय में संचालित सभी २० ज्ञानशालाओं में निःस्वार्थ सेवाएँ प्रदान करने वाली ११५ प्रशिक्षिकाओं को मोमेंटो द्वारा सम्मानित किया गया। साध्वीश्री के मुखारविंद से मंगल मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि देशभर में ५०० से अधिक ज्ञानशाला व लगभग ३६०० प्रशिक्षक अपने श्रम से हजारों-हजारों की संख्या में ज्ञानार्थियों को शिक्षण प्रशिक्षण देती हैं, खुद प्रशिक्षित होकर निस्वार्थ सेवाएँ दे रही हैं। टीपीएफ के राष्ट्रीय महामंत्री हिम्मत मांडोत की उपस्थिति रही।

हिमायतनगर ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने सुमधुर मंगलाचरण द्वारा प्रस्तुति दी। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रकाश भंडारी, तेयुप के मंत्री वीरेंद्र घोषल, तेममं की अध्यक्ष अनिता गीड़िया, ज्ञानशाला विभाग संयोजक सुनील बोहरा आदि सभी पदाधिकारियों ने ज्ञानशाला व प्रशिक्षिकाओं के प्रति मंगलकामना व्यक्त की। तेलंगाना की क्षेत्रीय संयोजक सीमा दस्साणी ने मुख्य अतिथि चारू शाह एवं उपस्थित सभी का स्वागत किया।

सभा अध्यक्ष सुरेश सुराणा ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में ज्ञानशालाओं की संख्या बढ़ाने की भावना प्रकट की। आंध्रा-तेलंगाना की आंचलिक संयोजक अंजू बैद ने उपस्थित सभी प्रशिक्षिकाओं की सेवाओं के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि, एनजीओ 'उड़ान' की संस्थापक चारू शाह ने बताया कि स्वयं शिक्षक होने पर उन्हें गर्व है और प्रशिक्षिकाओं की निःशुल्क सेवाओं पर उन्हें नाज है। साध्वीवृंद ने सुंदर गीतिका का संगान कर प्रशिक्षिकाओं का उत्साहवर्धन किया।

आज के डिजिटल युग में ज्ञानशाला की उपयोगिता पर प्रशिक्षिकाओं ने माइम एक्ट द्वारा मंचीय प्रस्तुति दी। इसमें डिंपल बैद, हेमा बांठिया, कविता आचछा, प्रिया दक, संतोष बोथरा, निशा दुगड़, गीतिका नाहटा व चेतना दक ने भाग लिया। सभा द्वारा आयोजित इस सम्मान समारोह में सभी ज्ञानशालाओं में सेवारत सभी प्रशिक्षिकाओं को स्मृति-चिह्न प्रदान किया गया। मंच संचालन क्षेत्रीय सह-संयोजक डिंपल बैद व पुष्पा बरड़िया ने किया। सभा के लक्ष्मीपत बैद ने आभार ज्ञापन किया।

ज्ञानशाला दिवस का आयोजन

कोयंबटूर।

मुनि सुधाकर जी एवं मुनि नरेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत बच्चों के मंगलाचरण से हुई। तत्पश्चात सभा उपाध्यक्ष उत्तम पारख एवं ज्ञानशाला संयोजिका मंजु गीड़िया ने अपने विचार रखे। प्रशिक्षिकाओं द्वारा ज्ञानशाला के महत्त्व पर सुंदर नाटिका प्रस्तुत की गई। उसके बाद वर्ष २०१९ व २०२० के श्रेष्ठ ज्ञानार्थी, पर्युषण आराधना पत्र आदि विजेता बच्चों को एवं शिशु संस्कार बोध भाग-१ से ५ में प्रथम, द्वितीय आने वाले बच्चों एवं अन्य बच्चों का प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार द्वारा सम्मान किया गया। ज्ञानशाला के प्रशिक्षिकों का सम्मान किया गया। ज्ञानशाला प्रशिक्षिका सरला बोहरा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला प्रशिक्षिक भावना मांडोत ने एवं स्नेहलता नाहटा ने किया। ज्ञानशाला दिवस के आयोजन के अगले सत्र में बच्चों के लिए २५ बोल पर आधारित रोमांचक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। क्विज का आयोजन दो ग्रुप में किया गया, ५ से १० साल के बच्चों के लिए एवं १० साल से ऊपर के बच्चों के लिए। बच्चों ने खूब उत्साह के साथ उसमें भाग लिया एवं विजेता टीम को पुरस्कृत किया गया। ५ से १० साल के बच्चों के लिए क्विज का संचालन ललिता बरलोटा एवं ज्योति बुरड़ ने किया एवं १० साल से ऊपर के बच्चों के लिए क्विज का आयोजन आरती रांका एवं कनक बुच्चा ने किया। अंत में कन्या मंडल की बहनों–ख्याति सेमलानी एवं श्रुति बाफना ने ज्ञानशाला के बच्चे एवं प्रशिक्षिकों के लिए रोमांचक गेम का आयोजन किया। कार्यक्रम में लगभग ३५ बच्चे उपस्थित रहे एवं २० प्रशिक्षक बहनों ने अपना सहयोग दिया।

ज्ञानशाला कार्यक्रम

जलगाँव।

तेरापंथी सभा के अंतर्गत ज्ञानशाला में रंगोली प्रतियोगिता, दीया डेकोरेशन प्रतियोगिता, ड्राइंग व कलरिंग प्रतियोगिता रखी गई, जिसमें कुल ३८ बच्चों ने भाग लिया। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष जितेंद्र चोरड़िया, मंत्री मनोज पुगलिया, ज्ञानशाला संयोजक नोरतमल चोरड़िया, सभा के पूर्व अध्यक्ष रतनलाल छाजेड़, वरिष्ठ श्रावक माणकचंद चोरड़िया व जज के रूप में स्वर्णा गांधी उपस्थित रहे।

मुख्य प्रशिक्षिका विनीता समदरिया ने स्वागत किया।

जिन ज्ञानार्थी बच्चों ने संकल्प पत्र भरे उनको प्राइज के द्वारा सम्मानित किया गया। जैन विद्या भाग-१ की ऑनलाइन परीक्षा में दिशा राजेश चोरड़िया ने ऑल इंडिया रेंक तृतीय स्थान हासिल किया जिसके लिए उन्हें सम्मानित किया गया। कंपिटीशन के विजेताओं को पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया गया। आभार ज्ञापन ज्ञानशाला प्रशिक्षिका दक्षता सांखला ने किया। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला प्रशिक्षिका रौनक चोरड़िया ने किया।

ज्ञानशाला संयोजक नोरतमल चोरड़िया, सह-संयोजिका मोनिका छाजेड़, टीचर्स मैनादेवी छाजेड़, सुषमा चोरड़िया के प्रयास ने कार्यक्रम को सफल बनाया। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए।

प्रेक्षाध्यान स्वस्थ जीवन की अमूल्य औषध है

सिकंदराबाद।

साध्वी काव्यलता जी ने तेरापंथ सभा द्वारा आयोजित कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि दुनिया में जीने वाले हर व्यक्ति की भावना रहती है–स्वस्थ व मस्त, प्रसन्न रहूँ। इसके लिए योगी पुरुष आचार्य महाप्रज्ञ जी ने प्रेक्षाध्यान के माध्यम से कुछ मंत्र, यौगिक क्रियाएँ, आसन, प्राणायाम जनता के सामने दिए। साध्वी सुरभिप्रभा जी ने ध्वनि के विविध प्रकार बताते हुए ओम, अर्हम, महाप्राण ध्वनि करवाई। साध्वी ज्योतियशा जी ने आकाश दर्शन समवृत्ति श्वास प्रेक्षा, कायोत्सर्ग आदि अनेक प्रयोग करवाए।

कार्यशाला में तेयुप सहमंत्री नीरज सुराणा, टीपीएफ सदस्य शिखा सुराणा, महिला मंडल मंत्री स्नेहा बांठिया, तेयुप सदस्य राहुल सुराणा आदि अनेक सदस्यों ने विशेष प्रयोग कर प्रसन्नता व्यक्त की।

एकाहिनक तुलसी-शतकम्

मुनि सिद्धकुमार

(क्रमशः)

(४७) त्वदीये नहि जानामि, वचने का चमत्कृतिः।
स्वास्थ्यलाभमकरोद् साध्वी, गन्तव्यस्थान आगता।।

गुरुवर! मैं नहीं जानता आपके वचनों में क्या चमत्कार है। जब साध्वी राजकुमारी जी (नोहर) का टायफायड-ज्वर के कारण अपने गंतव्य चातुर्मासिक स्थान तक पहुँचना असंभव लग रहा था। आपके वचनों का ऐसा विलक्षण प्रभाव पड़ा कि वे स्वस्थ भी हो गई और समय रहते अपने गंतव्य तक भी पहुँच गई। (प्रेरणा : पल दो पल की, भाग-१, पृष्ठ ८५)

(४८) त्वदीये नहि जानामि, वाग्दण्डे का चमत्कृतिः।
राजेन्द्रस्वामिनो हिक्का, दीर्घकालादरुद्ध हि।।

मैं नहीं जानता आपके उपलम्भ में क्या चमत्कार है। आपने नवदीक्षित मुनि राजेंद्र कुमार जी स्वामी की जोरदार उठावणी की, फिर कुछ समय पश्चात उन्हें अपने पास बुलाया एवं वात्सल्य से सिर सहलाते हुए रहस्य का उद्घाटन किया कि यदि वे इतने कठोर शब्दों से उपलम्भ नहीं देते तो उनकी हिचकी बंद नहीं होती। तब बालमुनि को समझ आया कि मेरे लंबे समय से चल रही हिचकी का गुरुवर्य ने उपाय कर दिया। (प्रेरणा : पल दो पल की, भाग-१, पृष्ठ ८९)

(४९) त्वदीये नहि जानामि, कवले का चमत्कृतिः।
भवद्कवलमात्रेण, भूतं दीर्घतपो गणे।।

प्रभो! मैं नहीं जानता आपके ग्रास में क्या चमत्कार है। साध्वी नोजांजी (सरदारशहर) ने आपके करकमलों से ग्रास प्राप्त कर २५ दिनों की शक्ति प्राप्त कर ली एवं सानंद तप संपन्न किया। (प्रेरणा : पल दो पल की, भाग-१, पृष्ठ १०४)

(५०) नो जानामि त्वदीयेषु, वाक्येषु का चमत्कृतिः।
त्वया मात्रत्रिवाक्येन, वमनशमनं कृतम्।।

गुरुवर्य! मैं नहीं जानता आपके वाक्यों में क्या चमत्कार है। आपके मुखारविंद से निकले शब्द–'कोई खास बात नहीं, चिंता मत करना, सब ठीक हो जाएगा।' यह तीन वाक्यों ने साध्वी प्रियंवदा जी की दुश्चिंतता समाप्त कर दी एवं हो रहे वमन का भी उपचार कर दिया। (प्रेरणा : पल दो पल की, भाग-१, पृष्ठ ११७)

(५१) त्वदीये नहि जानामि, दर्शने का चमत्कृतिः।
परोक्षे दर्शने प्राप्ते, भूतस्स्वस्थोऽरुणापतिः।।

गुरुदेव! मैं नहीं जानता आपके दर्शन में क्या चमत्कार है। जब विश्वदूत के संचालक एडवोकेट ए०पी० शुक्ला को अचानक हार्ट-अटैक आ गया और डॉक्टर भी कुछ कहने के हालत में नहीं थे, तब उनकी पत्नी श्रीमती अरुणा शुक्ला को आपकी एक दिव्य मूर्ति दिखाई दी। उन्होंने संकल्प किया कि उनके पति स्वस्थ होते ही, वे आपके दर्शन करने आएँगे और उसी दिन से क्रमशः स्वस्थ हो गए। इस प्रकार आपका अप्रत्यक्ष दर्शन भी कल्याणकारी है। (प्रेरणा : पल दो पल की, भाग-३, पृष्ठ २६)

(५२) त्वदीये नहि जानामि, चेङ्गिते का चमत्कृतिः।
भवदिङ्गितमात्रेण, ह्याभिन्नौ क्षुद्रश्रेष्ठिणौ।।

भगवन् मैं नहीं जानता कि आपके ईशारे में क्या चमत्कार है। कंटालिया प्रवास में पंडाल खचाखच भरा था, परंतु आपको वर्ण-भेद के आधार पर लोगों का बैठना नहीं भाया। आपने श्रोताओं को संबोधित किया और एक ईशारे में श्रेष्ठियों और किसानों की दूरी मिट गई और सब एक हो गए। (प्रेरणा : पल दो पल की, भाग-३, पृष्ठ ६१)

(५३) यदा यदा कुरूढीणां, वृद्धिर्भूता तदा तदा।
तुलसी तद्विनिशाय, सदैव समुपस्थितः।।

जब-जब कुरूढ़ियों की वृद्धि होती तब-तब उनका विनाश करने गुरुदेव श्री तुलसी सदा समुपस्थित रहते।

(शेष अगले अंक में)

आचार्यश्री तुलसी के १०८वें जन्म दिवस के विविध आयोजन

आचार्य तुलसी आलोकधर्मी महापुरुष थे

साहुकारपेट, चेन्नई।

तेरापंथ सभा भवन में साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में गुरुदेवश्री तुलसी का जन्म दिवस मनाया गया। साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी आलोकधर्मी व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने आलोक का जीवन जीया और दुनिया को आलोक दिया। आचार्य तुलसी का समग्र जीवन महकते गुलदस्ते की तरह है। उनके जीवन के हर कण की सौरभ अद्वितीय है, विलक्षण है। मानवता के मंगल कलश का हर चिंतन, निर्णय और क्रियान्विति के गठबंधन के साथ गतिशील रहता था। अक्षय ऊर्जा के स्रोत को जन्म-दिवस पर शत-शत नमन।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि आचार्य तुलसी ने तेरापंथ धर्मसंघ को अनगिनत अवदान दिए। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहाँ आचार्य तुलसी ने अपने अमिट हस्ताक्षर न किए हों। साध्वी डॉ० सुधाप्रभा जी ने कहा—आज हम संकल्प करें कि आचार्य तुलसी के सपने हमारे अपने सपने बनें। हम उन सपनों में नया रंग भरने का प्रयत्न करें। तुलसी के अवदान हमारे जीवन की मंजिल बनें। साध्वी समत्वयशा जी ने सुमधुर गीत का संगान किया।

साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने मंच संचालन करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी के जीवन में विरोधों के अंधड़ ही नहीं, तूफान आए। किंतु वे रुके नहीं, झुके नहीं बढ़ते रहे। यही उनकी सफलता का महामंत्र था। टीपीएफ अध्यक्ष राकेश खटेड़ ने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल से राजश्री डागा ने विचार रखे। चेन्नई के साथ नागपुर, करनूल, जयपुर, अहमदाबाद, मुंबई, बालोतरा, पचपदरा के श्रावक-श्राविकाओं ने इस अवसर पर भाव अभिवंदना की।

आचार्यश्री तुलसी का १०८वाँ जन्मदिवस

फारबिसगंज।

डॉ० साध्वी पीयूषप्रभा जी के सान्निध्य में आचार्यश्री तुलसी का १०८वाँ जन्मदिवस अणुव्रत दिवस के रूप में मनाया गया। सर्वप्रथम साध्वीश्री ने भक्तामर स्रोत एवं तुलसी अष्टकम का संगान किया। फारबिसगंज कन्या मंडल ने मंगलाचरण किया। सभा अध्यक्ष निर्मल मरोठी ने स्वागत वक्तव्य दिया। साध्वी पीयूषप्रभा जी ने आगे कहा कि कार्तिक शुक्ल दूज के दिन चंदेरी की पावन धरा पर माँ वंदना के कुक्षी से बालक तुलसी का जन्म हुआ। बचपन से ही होनहार तुलसी चिंतन की गुरुता के साथ जीवन में आगे बढ़े।

साध्वी भावनाश्रीजी ने आचार्यश्री तुलसी के जीवन के कुछ रोचक प्रसंग सुनाए। साध्वी सुधाकुमारी जी ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। अणुव्रत समिति अध्यक्षा प्रभा सेठिया, महिला मंडल अध्यक्ष कुसुम भंसाली, उपाध्यक्ष नीलम बोथरा, कमला महनोत, विराट नगर से समागत सभाध्यक्ष अध्यक्ष सतीश दुगड़, विनोद दुगड़, अभय बोथरा, मधुर दुगड़ ने गीत वक्तव्य द्वारा आचार्य तुलसी के प्रति अपने भाव व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी दीप्तियशा जी ने किया।

आचार्य तुलसी का १०८वाँ जन्मोत्सव

बालोतरा।

न्यू तेरापंथ भवन में साध्वी मंजुयशा जी के सान्निध्य में आचार्यश्री तुलसी का १०८वाँ जन्मदिवस अणुव्रत दिवस के रूप में आयोजित किया गया। साध्वीवृंद द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार के पश्चात तेममं ने तुलसी अष्टकम के संगान से मंगलाचरण किया।

तेरापंथ सभा के अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष जवेरीलाल सालेचा ने अपने विचार रखे एवं आचार्यश्री तुलसी के प्रति श्रद्धांजलि में भावनाएँ व्यक्त की। साध्वी मंजुयशा जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी प्रखर व्यक्तित्व व कर्तृत्व संपन्न थे। उन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ को नई ऊँचाइयाँ तथा नया भविष्य दिया।

साध्वी इंदुप्रभा जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी ने सबसे पहले शिक्षा के क्षेत्र में बहुत विकास किया तथा विश्वविद्यालय में पढ़ने वालों के रहन-सहन में भी अध्यात्म की पुष्ट रहे, प्रेरणा दी। कन्या मंडल एवं महिला मंडल द्वारा तुलसी के अवदानों पर प्रस्तुति दी गई। शैली गोगड़ ने मधुर गीतिका के माध्यम से गुरुदेव को भावांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर तेममं अध्यक्ष निर्मला संकलेचा, प्रकाश श्रीश्रीमाल आदि अनेक वक्ताओं ने अपने विचार रखे व गीतिका का संगान किया। साध्वी चारूप्रभा जी ने कविता द्वारा श्रद्धांजलि दी। सभी साध्वीवृंद, श्रावक-श्राविका सहित १०८ भाई-बहनों ने एक स्वर में एक साथ मधुर गीत का संगान किया। तेयुप अध्यक्ष संदीप ओस्तवाल, तेरापंथ सभा, तेममं, तेयुप, तेरापंथ किशोर मंडल, तेकमं, अणुव्रत समिति, ज्ञानशाला के गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे। रुचिका तातेड़ ने संचालन किया।

मानवता के मसीहा थे आचार्य तुलसी

दक्षिण मुंबई।

शासनश्री साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय' के सान्निध्य में आचार्यश्री तुलसी का १०८वाँ जन्मदिवस अणुव्रत दिवस के रूप में मनाया गया। साध्वी प्रेरणाश्री जी, साध्वी मृदुयशा जी, साध्वी ऋद्धियशा जी ने तुलसी अष्टकम द्वारा मंगलाचरण किया। अभातेयुप के राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य रवि दोसी, तेरापंथ सभा दक्षिण-मुंबई के अध्यक्ष गणपतलाल डागलिया ने स्वागत भाषण दिया।

स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल एवं तेरापंथ कन्या मंडल ने संयुक्त रूप से आचार्यश्री तुलसी के जीवन-वृत्त पर शब्दचित्र प्रस्तुत किया। साध्वी प्रियंवदा जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी मानवता के मसीहा एवं नवोन्मेष प्रज्ञा के धारक थे। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने एक चित्त आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। ज्ञानार्थियों ने 'देवलोक की सैर' नामक दृश्य प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ सभा दक्षिण-मुंबई के मंत्री दिनेश धाकड़ ने किया। आचार्य तुलसी जन्म दिवस के उपलक्ष्य में तुलसी संगीत प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें १३ प्रतियोगियों ने भाग लिया। प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को पुरस्कृत किया गया।

आचार्य तुलसी ने मानव मन में नैतिकता की ज्योत जलाई

विल्लुपुरम।

साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी के सान्निध्य में गुरुदेव तुलसी का १०८वाँ जन्मदिवस मनाया गया। नमस्कार महामंत्र से प्रारंभ कार्यक्रम में साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी ने कहा कि अमृतपुरुष आचार्यश्री तुलसी ने मानव मन के गलियारे में स्थित अनैतिकता का तमस दूर कर नैतिकता की ज्योत जलाई। वे सांप्रदायिक मंच से असांप्रदायिक, सार्वजनिक, सार्वभौमिक अणुव्रत की उद्घोषणा करने वाले प्रथम जैनाचार्य कहलाए।

साध्वी अनुप्रेक्षाश्री जी ने कहा कि आचार्य तुलसी कुशल जीवन शिल्पकार थे। उन्होंने अपने शिष्यों को योग्य, योग्यता और योग्यतम बनाया। साध्वी प्रबोधयशा जी ने अपने उद्गार व्यक्त किए।

इस कार्यक्रम को तपस्या की भेंट दी समता सुराणा ने। चेन्नई से समागत महिला मंडल की अध्यक्षा पुष्पा हिरण एवं मंत्री रीमा सिंघवी अपनी कार्यकारिणी सदस्यों की टीम के साथ साध्वीश्री जी के सान्निध्य में एक गीतिका एवं अपने भाव व्यक्त किए। शुभारंभ कन्या मंडल की भव्या सेठिया द्वारा मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण राजेश सुराणा, तेयुप से विशाल सुराणा, महिला मंडल से अध्यक्षा राखी सुराणा एवं गीता बरड़िया ने वक्तव्य एवं गीतिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल मंत्री स्नेहा भंडारी ने किया।

मेधावी छात्र सम्मान समारोह

बालोतरा।

साध्वी मंजुयशा जी के सान्निध्य में न्यू तेरापंथ भवन में टीपीएफ द्वारा मेधावी छात्र-छात्राओं का सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। टीपीएफ सदस्य डॉ० कपिल जैन ने बताया कि टीपीएफ द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में दसवीं एवं बारहवीं में जिन बच्चों ने ८५ प्रतिशत या उनसे अधिक अंक प्राप्त किए उन्हें स्वर्ण, रजत एवं कांस्य पदक से सम्मानित किया गया। साथ ही जिन बच्चों ने १०० अंक हांसिल किए उन्हें एक स्वर्ण पदक अलग से दिया गया।

टीपीएफ उपाध्यक्ष एडवोकेट आनंद मेहता ने पधारे हुए सभी उपस्थित जनों का स्वागत किया। टीपीएफ कोषाध्यक्ष भारती ओस्तवाल ने बताया कि इस वर्ष ४४ आवेदन आए हैं, जिसमें १४ बच्चों को गोल्ड, २१ को सिल्वर और ६ बच्चों को ब्रोंज मैडल से नवाजा गया।

पूर्व टीपीएफ अध्यक्ष विजय वडेरा ने टीपीएफ के शिक्षा कार्यों का उल्लेख करते हुए समाज के बच्चों को काउंसलिंग करने के प्रयास पर प्रकाश डाला। सभापति सुमित्रा देवी जैन एवं समाजसेवी ओम बांठिया ने बच्चों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना की।

साध्वी मंजुयशा जी ने अपने उद्बोधन में टीपीएफ की अहम भूमिका बताते हुए समाज में भविष्य में भी इसी तरह शिक्षा सेवाएँ दी जाएँ, प्रेरित किया। विद्यार्थियों को सम्मानित और प्रोत्साहित करने से उनका मनोबल बढ़ता है।

कार्यशाला का संचालन और आभार ज्ञापन टीपीएफ सदस्य विशाल पटवारी एवं डॉ० रमेश भंसाली ने किया। इस अवसर पर तेरापंथ समाज के गणमान्य नागरिक उपस्थित हुए।

दीपक सजाओ प्रतियोगिता का आयोजन

राजलदेसर।

तेरापंथ भवन में डॉ० साध्वी परमयशा जी के सान्निध्य एवं तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में कन्या मंडल द्वारा दिवाली के अवसर पर 'दीपक सजाओ' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें प्रतियोगियों द्वारा रंगों द्वारा दीपक सजाए गए। प्रतियोगिता में कन्या मंडल एवं ज्ञानशाला के कुल २३ प्रतियोगियों ने भाग लिया। डॉ० साध्वी परमयशा जी ने मंगलपाठ सुनाकर प्रतियोगिता की शुरुआत की। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की अध्यक्षा-मंत्री सहित ज्ञानशाला प्रशिक्षिका हेमलता घोषल एवं मोनिका बैद ने नमस्कार महामंत्र से किया।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा के मंत्री राजकुमार विनायकिया, तेयुप अध्यक्ष मुकेश श्रीमाल, तेयुप मंत्री रजत बैद, वरिष्ठ श्रावक तिलोकचंद बैद, अणुव्रत समिति के नवनियुक्त अध्यक्ष शंकरलाल सोनी, निवर्तमान अध्यक्ष लाभचंद सोनी सहित अनेक सदस्यगण तथा श्रावक-श्राविकाओं एवं गणमान्य जनों की उपस्थिति रही।

प्रतियोगिता में कन्या मंडल की कन्याओं एवं ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने उत्साह के साथ भाग लेकर रंग-बिरंगे कलात्मक दीपक सजाए। महिला मंडल की अध्यक्षा प्रेम देवी विनायकिया ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल की मंत्री सविता बच्छावत ने किया।

प्रेक्षावाहिनी का आयोजन

तेलंगाना।

प्रेक्षा फाउंडेशन के अंतर्गत आंध्रा तेलंगाना की प्रेक्षा वाहिनी का आयोजन किया गया। प्रेक्षावाहिनी की मासिक क्लास का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। त्रिपदी वंदना वर्षा बैद ने करवाई। सुमधुर प्रेक्षाध्यान गीतिका बोलाराम से स्नेहा बांठिया ने किया। यौगिक क्रिया पूजा पटावरी द्वारा करवाई गई। ध्यान प्रवचन प्रेक्षा प्रशिक्षक नविता नाहटा ने ध्यान के बारे में जानकारी दी। रीता सुराणा ने ध्यान के पूर्व तैयारी कायोत्सर्ग, दीर्घ श्वासप्रेक्षा, ज्योति केंद्र प्रेक्षा व समापन विधि का प्रयोग करवाया। एक्यूप्रेशर द्वारा हम अपने को स्वस्थ कैसे रख सकते हैं, बबीता संचेती द्वारा बताया गया।

मंगलभावना निशा पींचा ने की। आभार व संचालन प्रेक्षावाहिनी की संवाहक रीता सुराना ने किया। बहनों की जिज्ञासा का समाधान किया गया। अनिता, शकुंतला, मंजुला, चंदन, श्वेता, पूजा, ममता, बबीता, रजनी, निशा इन सभी का कार्यक्रम में सहयोग रहा।

✦ पारिणामिक भाव दो प्रकार का होता है–अनादि व सादि। छह द्रव्य, लोक-अलोक, भव्य-अभव्य–ये दस अनादि पारिणामिक भाव हैं। ये कभी भी द्रव्यतः परिवर्तित नहीं होते।
—आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

व्यक्तित्व का विकास कार्यशाला

जसोल।

तेयुप के तत्त्वावधान में मुनि धर्मेश कुमार जी के सान्निध्य में व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का समापन समारोह आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ तेममं की बहनों द्वारा गीतिका से मंगलाचरण किया। तेयुप मंत्री दिनेश वडेरा ने सेमिनार के बारे में विस्तृत जानकारी दी। इस कार्यशाला में तेयुप, महिला मंडल एवं कन्या मंडल सहित ५८ संभागियों ने भाग लिया और ३३ संभागियों ने परीक्षा देकर अपनी सहभागिता दर्ज की। कार्यशाला में मुनिश्री द्वारा यौगिक क्रियाएँ, प्राणायाम, प्रेक्षाध्यान, भावनात्मक व मानसिक शक्ति के विकास के प्रयोग करवाए गए।

तेयुप अध्यक्ष जितेंद्र मांडोत ने बताया कि कार्यशाला के दौरान जिन ८ विषयों का प्रतिवादन किया गया, जिसमें लक्ष्य प्राप्ति, समय प्रबंधन, स्वास्थ्य प्रबंधन, तनाव प्रबंधन, उच्च मानसिक शक्तियों का विकास, एकाग्रता एवं कार्यदक्षता का विकास, स्मृति विकास व भावनात्मक विकास सहित शामिल है।

मुनि धर्मेश कुमार जी ने कहा कि इस कार्यशाला को प्रारंभ समझे व अपने आप पर एक्सपीरियंस करें तथा जीवन को प्रयोगशाला बनाएँ। इस कार्यशाला में पवन छाजेड़, रक्षा सालेचा, अंजु वड़ेरा, नीतू सालेचा व मनीषा कोठारी ने बाजी मारी मतलब ये संभागी टॉपर रहे। कार्यशाला में मूल्यांकन व व्यवस्था में संपतराज चौपड़ा, डूंगरचंद सालेचा, सुरेंद्र बी० सालेचा, भंवरलाल भंसाली, शंकरलाल ढेलड़िया, रमेश वोहरा, पीयूष सालेचा व तरुण भंसाली सहयोगी रहे।

खतरों के खिलाड़ी का आयोजन

पर्वत पाटिया।

तेरापंथ भवन में तेयुप के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा 'खतरों के खिलाड़ी का आयोजन किया गया, जिसमें प्राप्त २१६ प्रविष्टियों में से ३० संभागियों को चयनित किया गया। सर्वप्रथम कार्यक्रम की शुरुआत मुनि सुव्रत कुमार जी द्वारा नमस्कार महामंत्र एवं प्रेरणा पाथेय से हुई। तेयुप अध्यक्ष चंद्रप्रकाश परमार ने उपस्थित महानुभावों का स्वागत किया।

निवर्तमान अध्यक्ष कांतिलाल सिंघवी, अभातेयुप सदस्य कुलदीप कोठारी, भूतपूर्व सभाध्यक्ष ज्ञान कोठारी ने अपने विचार रखे। सभा अध्यक्ष कमल पुगलिया ने अपने भाव व्यक्त किए एवं हरी झंडी दिखाकर कार्यक्रम के शुरुआत की घोषणा की। चयनित संभागियों की ६ टीम बनाकर उनको ६ राउंड में अलग-अलग टास्क दिए गए। ६ राउंड टास्क में भी अलग-अलग लेवल रखे गए, टास्क में दिए गए स्टंट में संगठन संस्कार, अध्यात्म और फिटनेस सभी का समावेश किया गया। जिसमें यश छाजेड़ की टीम ने ६ राउंड पूर्ण किए।

कार्यक्रम में सभा सदस्यों के अलावा एवं तेयुप से उपाध्यक्ष प्रदीप पुगलिया, मंत्री भरत जैन एवं किशोर मंडल सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में मुदित बाफना, श्रेयांश गोलछा, किशोर मंडल प्रभारी शुभम नाहटा, संयोजक जिग्नेश गांधी, सह-संयोजक पारस गंग, नवीन गोलछा, राहुल बोथरा का अथक श्रम रहा।

मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव

पर्वत पाटिया।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा नमस्कार महामंत्र के सामुहिक मंत्रोच्चार से रक्तदान शिविर का शुभारंभ किया गया। इसके अंतर्गत व्यक्तिशः रक्तदान करवाते हुए ६९ यूनिट रक्त एकत्रित हुआ। १० जनों ने पहली बार रक्तदान किया और आगे भी रक्तदान करने की इच्छा व्यक्त की। रक्तदान शिविर में एक दंपति ने सजोड़े एवं दो महिलाओं ने भी रक्तदान किया।

रक्तदान शिविर में विधायक संगीताबेन पाटिल, स्थानीय पार्षद दिनेश राजपुरोहित ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई एवं स्थानीय परिषद द्वारा किए जाने वाले कार्यों की सराहना की। एमबीडीडी के राष्ट्रीय सहप्रभारी सौरभ पटावरी एवं अभातेयुप सदस्य कुलदीप कोठारी ने उपस्थित रहकर परिषद का उत्साहवर्धन किया। शिविर को सफल बनाने में पर्यवेक्षक प्रदीप पुगलिया एवं संयोजक प्रशांत महनोत के साथ पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्यों का अथक श्रम रहा।

तेयुप के अध्यक्ष चंद्रप्रकाश परमार ने सभी सदस्यों एवं ब्लड बैंक का आभार व्यक्त किया। ब्लड बैंक के रूप में महावीर ब्लड बैंक ने अपनी सेवा दी।

चतुर्थ रक्तदान शिविर

पूर्वांचल-कोलकाता।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा इस सत्र का चतुर्थ रक्तदान शिविर पनाच कॉम्प्लेक्स में आयोजित किया। जिसमें कुल ६५ लोगों का राजिस्ट्रेशन दर्ज हुआ और ५० यूनिट रक्त का दान युवा शक्ति ने किया।

शिविर में परिषद के उपाध्यक्ष-प्रथम एवं एमबीडीडी के प्रभारी अमित बैद, कार्यसमिति सदस्य व एमबीडीडी के संयोजक रवि दुगड़, विवेक सुराणा, प्रभात चंडालिया, बिनीत बैद, पंकज आंचलिया, अभिषेक कोचर आदि उपस्थित थे।

शिविर की आयोजना में पनाच अपार्टमेंट ऑनर्स एसोसिएशन एवं समता युवा संघ का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। परिषद ने सभी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया। रक्तदान शिविर में विशेष श्रम दिया परिषद के विवेक सुराणा, विनीत बैद, प्रभात चंडालिया, पंकज आंचलिया आदि ने।

सेवा कार्य

साउथ हावड़ा।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप के साथ रामराजा तल्ला स्थित जगद गुरु शंकराचार्य मठ (शंकर मठ) के गौशाला में सेवा कार्य करने उपस्थित हुए। कार्यक्रम का प्रारंभ परिषद के निवर्तमान अध्यक्ष संस्कारक पवन कुमार बैंगानी ने सामुहिक मंगलाचरण के साथ करवाया। परिषद के अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने सभी का स्वागत किया। गौशाला में लगभग ग्यारह गायों का खाद्य पदार्थ खिलाकर सेवा कार्य किया गया।

शंकर मठ के आचार्य डॉ० प्रज्ञा नंदो सरस्वती ने भी सेवा कार्य का संज्ञान लिया। उपस्थित सभी सदस्यों ने मठ के आचार्य को मंगलभावना पत्रक भेंट किया। कार्यक्रम में उपाध्यक्ष मनीष कुमार बैद, ज्ञानमल लोढ़ा, सहमंत्री अमित बेगवानी सहित अनेकजनों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार सामाजिक कार्यों के पर्यवेक्षक अमित बेगवानी ने किया।

दंपति शिविर कार्यशाला

डोंबिवली।

तेयुप द्वारा दंपति शिविर कार्यशाला का आयोजन साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम के संयोजक प्रमोद इंटोदिया एवं सरोज इंटोदिया की मेहनत से करीब ४५ दांपत्य जोड़ों ने भाग लिया। सभी दांपत्य जोड़ों का स्वागत कन्या मंडल द्वारा किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से की गई। तत्पश्चात तेयुप द्वारा मंगलाचरण का संगान किया।

साध्वी संयमलता जी ने कहा कि पति-पत्नी का रिश्ता खून का रिश्ता नहीं होता है, लेकिन यह रिश्ता खून के रिश्ते से भी अधिक मजबूत होता है, यह रिश्ता विश्वास की बुनियाद पर टिका है, इस रिश्ते की मजबूती व मधुरता तभी कायम रह सकती है जब दोनों एक-दूसरे को समझें, सहन करें और छोटी-छोटी बातों को मन में न लगाएँ, छोड़ दें।

साध्वी मार्दवश्री जी ने कहा कि दांपत्य जीवन को सुखमय बनाने के लिए जरूरी है हम एक-दूसरे की अच्छी-अच्छी बातों पर जाएँ तो रिश्तों को निभाना आसान हो जाता है।

कार्यक्रम की मुख्य वक्ता मंगला पाटिल का महावीर बड़ाला द्वारा परिचय दिया। मुख्य वक्ता मंगला पाटिल ने अपने विचारों की प्रस्तुति दी। तत्पश्चात साध्वी मार्दवश्री जी ने कन्या मंडल मेघना सिंघवी एवं दिव्या सोनी के द्वारा सभी जोड़ों को डम्ब सराज गेम खिलाए एवं प्रश्न-पत्र द्वारा सभी जोड़ों के विचारों को लिया गया।

कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम के संयोजक प्रमोद एवं सरोज इंटोदिया द्वारा किया गया। कार्यक्रम का आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री विकास कोठारी द्वारा किया गया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

राजराजेश्वरी नगर।

तेयुप द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन सेंचुरी इंडस अपार्टमेंट, राजराजेश्वरी नगर जीवरक्षा वालंटरी ब्लड बैंक के सहयोग से किया गया। सामुहिक नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली ने सभी का स्वागत किया। इस शिविर में कुल १७ यूनिट रक्त एकत्रित हुआ। अध्यक्ष सुशील भंसाली, उपाध्यक्ष धर्मेश नाहर, सहमंत्री सरल पटावरी, पूर्व अध्यक्ष राजेश भंसाली, एमबीडीडी के स्थानीय संयोजक विकास छाजेड़ एवं कार्यसमिति सदस्य आदि उपस्थित रहे।

शिविर का सफल आयोजना में विनीत सेठिया, प्रशांत बोहरा एवं प्रकश बोहरा का योगदान रहा। तेयुप, राजाराजेश्वरी नगर द्वारा रक्तदाताओं को प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया तथा जीवरक्षा वालंटरी ब्लड बैंक ने तेयुप द्वारा इस कैंप के आयोजन के लिए सम्मानित किया। संयोजक विकास छाजेड़ ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

खुशियों की दिवाली

सूरत।

अभातेयुप के त्रिआयामी संकल्प सेवा, संस्कार और संगठन। सेवा के क्षेत्र में मानव सेवा को समर्पित इस वर्ष दिवाली मनाव सेवा ट्रस्ट के साथ मनाई गई। मानव सेवा ट्रस्ट जो बिन वारसी, निराधार और पीड़ित लोगों का आश्रम है यहाँ पर इन लोगों को 'प्रभु जी' के नाम से संबोधित किया जाता है। तेयुप और किशोर मंडल ने अपना एक दिन इन प्रभु जी के साथ व्यतीत किया और इन्हें अपने हाथों से भोजन कराया। इसके साथ ही दिव्यम मनीष परमार और धैर्य अभिनंदन गादिया का जन्मदिवस भी मानव सेवा ट्रस्ट में ही मनाया गया।

ट्रस्ट के संचालक जयराम भाई ने अभी तक लगभग २५०० लोगों को उनके परिवार के साथ मिलन करवाया है। तेयुप के अध्यक्ष गौतम बाफना ने उन्हें आश्वासन दिया कि इस कार्य में तेयुप पूर्णतया उनके साथ है। मानव सेवा ट्रस्ट में ट्रस्ट के लोगों के साथ तेयुप से गौतम बाफना, अभिनंदन गादिया, महेश संकलेचा, दीपक चोरड़िया, प्रकाश घोड़ावत, किशोर मंडल संयोजक संयम आंचलिया, सह-संयोजक मयंक डागा के साथ अच्छी संख्या में किशोरों की उपस्थिति रही।

रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन

कांटाबांजी।

अभातेयुप की शाखा तेयुप द्वारा इस वर्ष दीपावली के असर पर रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। तेयुप के मंत्री पीयूष जैन ने बताया कि तेयुप, कांटाबांजी की शाखा सेवा, संस्कार और संगठन के आयामों में निरंतर कार्यरत रहती है। साथ ही नगर की प्रतिभाओं को भी सामने लाने में प्रयासरत रहती है। इस उद्देश्य से इस बार नगर में दीपावली के अवसर पर रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन रंगोली के माध्यम से पूरा हुआ।

तेयुप अध्यक्ष हेमंत जैन ने बताया कि इस प्रतियोगिता में कुल ३९ प्रतियोगियों ने हिस्सा लिया और सभी की रंगोली एक से बढ़कर एक थी। इस रंगोली की खास बात यह थी कि रंगोली के साथ-साथ तेयुप का लोगो भी बनाना अनिवार्य था।

इस प्रतियोगिता में निर्णायकगण के रूप में टीपीएफ से अनुपमा जैन और श्रद्धा अग्रवाल का सहयोग प्राप्त हुआ। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पायल अग्रवाल, द्वितीय स्थान पर तनीषा खंडेलवाल और तृतीय स्थान पर साक्षी जैन, ताशु मोटे और राजबाला जैन रहे। प्रतियोगिता के पुरस्कार के प्रायोजक तेयुप अध्यक्ष हेमंत जैन रहे। विजेताओं को चाँदी के सिक्के देकर प्रोत्साहित किया गया।

रंगोली प्रतियोगिता के संयोजक पीयूष जैन और गौरव जैन थे। परिषद के सचिव पीयूष जैन ने सभी निर्णायक गणों का आभार ज्ञापन किया।

रक्तदान शिविर

गांधीधाम (कच्छ)।

सरदार वल्लभभाई पटेल के १४६वीं जन्मजयंती के अवसर पर तेयुप द्वारा राजाभाई ब्लड बैंक गुरुकुल गांधीधाम में रक्तदान शिविर का आयोजन किया। जिसमें कुल १०० रक्तदाताओं ने ३५००० सीसी रक्त का रक्तदान किया एवं इस शिविर में सभी रक्तदाताओं का तेयुप द्वारा २:५ लाख का इंश्योरेंस (PA) निःशुल्क करवाया गया व ब्लड बैंक के डॉक्टर एवं नर्सेज को स्मृति चिह्न प्रदान किया।

डेंगू मरीज के लिए १० यूनिट एवं ४ यूनिट रक्त की आपूर्ति की गई।

इस शिविर को सफल बनाने में तेयुप के अध्यक्ष विकास सुराणा, मंत्री संदीप सिंघवी, उपाध्यक्ष रोहित, ढेलडिया, निकुंज चोपड़ा, संगठन मंत्री हर्षित डोशी, कार्यकारिणी सदस्य चिराग डोशी, सदस्य विशाल सिंघवी, रोनक बाफना, कार्यक्रम के संयोजक शिवांकर बोथरा एवं अन्य सदस्य और ब्लड बैंक के डॉक्टर्स, नर्सेज ने सफल बनाने में सहयोग किया।

दो दिवसीय दक्षिणांचल विराट युवा सम्मेलन का आयोजन

उमंग के साथ भरें जीवन में नवरंग

चेन्नई के पाँचवें आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल स्टोर का शुभारंभ

चेन्नई।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्त्वावधान में साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में चेन्नई में दो दिवसीय दक्षिणांचल विराट युवा सम्मेलन का आयोजन हुआ। अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने जैन ध्वजारोहण किया। साध्वीश्री जी के मंगल मंत्रोच्चार एवं अभातेयुप अध्यक्ष पंकज डागा की उद्घोषणा के साथ सम्मेलन की शुरुआत हुई। तेयुप, विजयनगर ने मंगल संगान, कन्या मंडल ने स्वागत गीत, तेयुप चेन्नई ने उमंग गीत की प्रस्तुति दी।

युवाओं को संबोधित करते हुए साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि हमारे मन में गणभक्ति और गुरुभक्ति का दरिया लहराता रहे। हमारी श्रद्धा-भक्ति, हमारी वाणी-व्यवहार में मुखरित होनी चाहिए। हमारी आस्था चट्टान से भी मजबूत होनी चाहिए। हमें होश और जोश के साथ आगे बढ़ना चाहिए। जोश तो जन्म से ही रहता है, होश को साथ में जोड़ दिया जाने वाला कार्य सफल निष्पत्ति को प्राप्त करता है।

साध्वीश्री जी ने आह्वान किया कि युवा शक्ति गुरु के आदेश, निर्देश पर समर्पित रहे। शक्ति का संवर्धन करती रहे। उमंग के साथ जीवन में नव रंग भरें।

युवा को नहीं रोक पाती आपदा-विपदा

अभातेयुप अध्यक्ष पंकज डागा ने युवाओं में जोश का शंखनाद करते हुए कहा कि युवा जब किसी कार्य को अपने कंधों पर ले लेता है, कार्य करने का निर्णय ले लेता है, उस ओर गतिशील हो जाता है। तब वह, तब तक चैन से नहीं बैठता, जब तक वह उसे निष्पत्ति तक नहीं पहुँचा पाता। आँधी, तूफान, साइक्लोन या अन्य कोई आपदाएँ उसे रोक नहीं पाती।

अभातेयुप के राष्ट्रीय महामंत्री पवन मांडोत ने कहा कि राष्ट्रीय अधिवेशन में सीमा के कारण कम संख्या में युवा पहुँच पाते हैं। उसी के मद्देनजर रखते हुए क्षेत्रीय सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है, जिससे युवा नजदीक से संघ, संगठन की गतिविधियों को जान उसमें सहभागी बन सकते हैं।

रात्रिकालीन सत्र में तेयुप की अदालत कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें वकील की भूमिका हिमांशु डूंगरवाल ने निभाते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री से विभिन्न प्रकार के प्रश्न किए जिनका संतोषजनक जवाब दिया गया।

संचालन करते हुए साध्वी डॉ० सुधाप्रभा जी एवं साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने कहा कि युवाओं में युग धाराओं को मोड़ने की शक्ति होती है।

अभातेयुप पूर्वाध्यक्ष पन्नालाल टाटिया, अभातेयुप पूर्वाध्यक्ष गौतमचंद डागा, उपाध्यक्ष जयेश मेहता, सहमंत्री अनंत बागरेचा, भूपेश कोठारी ने सारगर्भित विचार व्यक्त किए। हिमानी ने अपनी ओजस्वी शैली में हैप्पीनेस के सूत्रों का प्रतिपादन किया।

कार्यशाला के दूसरे दिन साध्वीश्री जी ने युवाओं के साथ जनसभा को शक्ति-संवर्धन, शक्ति रक्षक से संपन्न बनने के लिए मंत्रोच्चार का अनुष्ठान करवाया।

अभातेयुप प्रबंध मंडल ने युवादृष्टि के नवीन अंक को साध्वीश्री जी को निवेदित किया। अंतिम सत्र में युवा साथियों की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया।

मुख्य वक्ता डॉ० महावीर गोलेच्छा बालोतरा ने युवा शक्ति, करें क्रांति पर अनेकों सूत्र युवा साथियों को दिए। विविध उदाहरणों, घटनाओं के माध्यम से आगे बढ़ने के मार्ग सुझाए। संघ, संगठन और संघपति के प्रति समर्पित भाव, श्रद्धा के साथ सलक्ष्य संलग्न बनने का आह्वान किया।

सम्मेलन संयोजक विकास कोठारी ने संयोजकीय वक्तव्य, अध्यक्ष मुकेश नवलखा ने स्वागत स्वर, अभातेयुप वरिष्ठ उपाध्यक्ष रमेश डागा, कोषाध्यक्ष भरत मरलेचा ने अभिनंदन स्वर प्रस्तुत किए। तेयुप किशोर मंडल ने रोचकपूर्ण अंदाज में अभातेयुप की अब तक की यात्रा को सुंदर चित्रण के साथ प्रस्तुति दी। इस अवसर पर तेरापंथ सभा, महिला मंडल, अभातेयुप जेटीएन के साथ गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। अधिवेशन में अधिवेशन प्रायोजक एवं आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल स्टोर के अर्थ विसर्जन कर्ताओं को तेयुप द्वारा सम्मानित किया गया।

तेरापंथ सभा मंत्री गजेंद्र खांटेड़, चेन्नई तेयुप अध्यक्ष मुकेश नवलखा, मैसूर तेयुप अध्यक्ष विक्रम जैन इत्यादि ने अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए।

तेयुप, मैसूर, तिरुपुर ने अलग-अलग सत्रों में मंगल संगान किया। तेयुप मंत्री संतोष सेठिया ने मंच संचालन एवं आभार ज्ञापन किया। समागत तेयुप साथियों, परिषदों, विशिष्ट अतिथियों को तेयुप, चेन्नई की ओर से सम्मानित किया गया। संघगान, पुनर्मिलन के संकल्प और मंगलपाठ के साथ सम्मेलन परिसंपन्न हुआ।

मानव सेवा को समर्पित उपक्रम के अंतर्गत नवीन आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल स्टोर का जैन संस्कार विधि से शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर पूर्व में ट्रिप्लीकेन में संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एंड डेंटल केयर और आचार्य महाश्रमण क्लीनिक का भी परिवर्तित भवन में शुभारंभ हुआ।

अभातेयुप संस्कारक स्वरूपचंद दांती, मांगीलाल पितलिया, पुखराज पारख ने संपूर्ण मंगल मंत्रोच्चार के साथ शुभारंभ विधिसम्मत संपादित किया।

दुनिया में सबसे ज्यादा गतिशील है आदमी...

(पृष्ठ १२ का शेष)

मेरा त्याग-प्रत्याख्यान सामायिक, तत्त्वज्ञान, श्रद्धा बनी रहे। ये श्रावकत्व के जो आयाम हैं, वो अंतिम श्वास तक बने रहें। मेरा सम्यक्त्व इस जन्म तक ही नहीं, आगे भी कायम रहे। वो कभी न छूट जाए।

श्रावक यह भी सोचे कि कभी वो दिन आए, मैं साधुत्व का पद प्राप्त करूँ। श्रावकत्व मेरा और निखारत्व को प्राप्त हो। आदमी कर्मवाद को समझ करके पाप कर्म से बचने का यथोचित प्रयास रखे, यह काम्य है। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि स्वाध्याय का एक प्रकार है–पृच्छा यह भी कर्म निर्जरण का हेतु बनती है, आत्मा निर्मल बनती है। प्राचीन काल में ज्ञान की एक प्रक्रिया चलती थी। किस प्रकार उस समय ज्ञान को सुरक्षित रखा जाता था। उसके आगमकालीन पाँच अंग हैं। साध्वीवर्या जी ने कहा कि हमारा जीवन एक सुंदर बगीचा है। उसको अच्छा बनाए रखने के लिए हमें भी एक सुरक्षा बाड़ की अपेक्षा है। वह बाड़ है–इंद्रिय संयम।

मुख्य प्रवचन के पश्चात तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के १४वें वार्षिक अधिवेशन का शुभारंभ हुआ। टीपीएफ के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि रजनीश कुमार जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष नवीन पारख, मुख्य न्यासी एम०सी० बालडोआ, टीपीएफ गौरव से सम्मानित होने वाले संपतमल नाहटा ने अपनी भावनाएँ श्रीचरणों में व्यक्त की। आचार्यप्रवर ने अपने आशीर्वचन में फरमाया कि टीपीएफ एक बौद्धिक संस्था है। इसके सदस्यों में बौद्धिकता के साथ विज्ञान और आध्यात्मिकता का समावेश हो जाए तो संस्था और आगे बढ़ सकती है।

नवी मुंबई से सुरेश नायक ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

✦ व्यक्ति जिस कार्य में संलग्न हो, उसमें तल्लीन होना व एकाग्र होना भावक्रिया है।

—आचार्यश्री महाश्रमण

राष्ट्रीय डॉक्टर्स सम्मेलन का आयोजन

कृत कर्मों का फल स्वयं को ही भोगना पड़ता है : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ११ नवंबर, २०२१

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि सूयगड़ो आगम में शास्त्रकार ने कर्मवाद के संदर्भ में प्रज्ञापन किया है कि इस संसार में प्राणी अपने-अपने कर्मों के द्वारा दुःखी बनते हैं। प्राणी भी भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं। कर्म भी अपने-अपने हैं। ८४ लाख जीव योनियाँ बताई गई हैं। अपने कर्मों से प्राणी सुख या दुःख पा लेते हैं। पुण्य-पाप अपना-अपना होता है।

प्राणी स्वयं अपनी क्रियाओं से, अपने आचरणों से, कर्मों का उपचय, संग्रहण और पुष्टिकरण करता है। जो कर्म बंध जाते हैं, फिर उनका फल भी प्राणी को भोगना होता है। अन्यत्र कहा गया है कि जब कर्मों के उदय से दुःख आता है, तो ज्ञाति लोग, स्वजन, मित्रवर्ग और भाई है, वो दुःख को बँटा नहीं सकते। अकेला स्वयं प्राणी कर्म का फल भोगता है, क्योंकि कर्म तो अपने कर्ता का अनुगमन करता है, उसी को फल देता है।

एक मनुष्य जाति को हम देखें, आदमी भिन्न-भिन्न रूपों में दिखाई देते हैं। विद्वान भी हैं, अज्ञानी भी हैं। शरीर की आकृति अलग-अलग होती है। शारीरिक शक्ति, स्वभाव, आयुष्य, प्रभाव, प्रतिष्ठा, शक्ति (अंतराय कर्म) में भिन्नता होती है। पशुओं में भी भिन्नता होती है। पुण्य-पाप का अपना-अपना योग होता है। देव-जगत में भी अंतर होता है। कर्मों के कारण से भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं।

पुण्य की इच्छा करना भी बढ़िया नहीं है, उदय में आए वो बात अलग है। साधना से पुण्य का बंध हो सकता है। आदमी कामना निर्जरा की करे। सिद्धांत है, हमारी मान्यता में कि पुण्य का बंध निर्जरा के साथ ही होता है। बिना निर्जरा के कोरा पुण्य नहीं। जैसे अनाज के साथ भूसी। पुण्य सहचार है। भूसी के लिए कोई खेती नहीं करता। हमारा मूल लक्ष्य निर्जरा का हो।

निर्जरा और संवर दो चीज हैं। पर महत्त्वपूर्ण तो संवर ज्यादा है। हमारी मान्यता में चार गुणस्थान तक संवर नहीं माना गया, पर निर्जरा हो सकती है। मिथ्यात्व आश्रव चौथे गुणस्थान में नहीं होता। निर्जरा करने वाले को मुक्ति मिले या न भी मिले। पर संवर जिसके हो गया उसे मुक्ति मिलेगी ही। निर्जरा में भजना है, संवर में नियमा है। निर्जरा के साथ संवर न भी हो, पर संवर की साधना जिसने कर ली है, उसके निर्जरा होगी ही होगी। यह बात तय है।

कर्मों के मार्ग को रोकने के लिए संवर की साधना जरूरी है और पूर्वार्जित कर्मों को क्षीण करने के लिए निर्जरा-तप का महत्त्व है। आत्मा की उज्ज्वलता निर्जरा है। आदमी ने वर्तमान भव में तो पाप ज्यादा नहीं किए पर पिछले भवों के कर्म उदय में आते हैं, तो आदमी दुःखी हो सकता हैं। पता नहीं किस कर्म का फल किस जन्म में भोगना पड़ जाए। आदमी पाप कर्मों के सेवन से बचने का प्रयास करे, यह काम्य है।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि जिज्ञासा के बिना शास्त्र का विकास नहीं हो सकता। ज्ञान को बढ़ाने के संदर्भ में हमें जिज्ञासा करनी होगी और उसे सुनने की इच्छा करनी होगी।

टीपीएफ द्वारा पाँचवाँ राष्ट्रीय डॉक्टर सम्मेलन पूज्यप्रवर की सन्निधि में शुरू हुआ। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया कि आदमी के जीवन में दो तत्त्वों का योग होता है—आत्मा और शरीर। मृत्यु है—आत्मा और शरीर का वियोग। मोक्ष है—हमेशा के लिए शरीर से आत्मा का मुक्त हो जाना। यह हमारा स्थूल शरीर होता है। स्थूल शरीर के सिवाय दो शरीर और होते हैं। तेजस और कार्मण शरीर।

जीवनशैली कैसी हो यह स्थूल शरीर का विषय है। शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा हो। मानसिक और भावात्मक शरीर के साथ सामाजिक शरीर भी होता है। डॉक्टर का क्षेत्र शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य तक हो सकता है, भावनात्मक स्वास्थ्य आध्यात्म-जगत का विषय बनता है। टीपीएफ आध्यात्मिक, धार्मिक विकास करता रहे। डॉक्टर का एक काम तो चिकित्सा सेवा का है, दूसरा काम है कि उसका व्यक्तिगत जीवन भी अच्छा रहे, शांति रहे। साथ में थोड़ा समय धार्मिक प्रवृत्ति के लिए चलता रहे, ये हमारी आत्मा के लिए है। अच्छी प्रेरणा मिले, अच्छा विकास हो।

टीपीएफ से डॉ० अनिल भंडारी, डॉ० चेतन सामरा व डॉ० रणजीत नानावटी ने अपने भाव रखे। तिस्ता झाबक ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

जैविभा के वाइस चांसलर बच्छराज दुगड़ ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। बच्छराज दुगड़ एवं अन्य पदाधिकारियों ने जैविभा ब्राउसर श्रीचरणों में लोकार्पित किया।

समणी कुसुमप्रज्ञा जी ने अपनी भावना रखी।

जैविभा ब्राउसर के बारे में पूज्यप्रवर ने फरमाया कि जैन विश्व भारती इंस्टीट्यूट डीम्ड यूनिवर्सिटी परमपूज्य आचार्य तुलसी के समय में इसका जन्म हुआ था। इस संस्थान के द्वारा कितना कार्य किया जा रहा है। अन्य संप्रदाय के साधु भी इस संस्थान से डिग्री प्राप्त करते हैं। उपकार का काम होता है। जैनत्व का प्रभाव बना रहे।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

टीपीएफ के १४वें वार्षिक अधिवेशन का शुभारंभ

दुनिया में सबसे ज्यादा गतिशील है आदमी का मन : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १२ नवंबर, २०२१

तपोनिधि शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सूयगड़ो आगम की व्याख्या करते हुए फरमाया कि शास्त्रकार ने बताया है—मृत्यु एक दिन होती ही है। कई बार जीवन काल में ही आदमी को एक स्थिति से दूसरी स्थिति में जाना पड़ सकता है। देव, गंधर्व, राक्षस, असुर, पातालवासी नाग कुमार, राजा, जन साधारण, श्रेष्ठी और ब्राह्मण ये सभी दुःखपूर्वक अपने-अपने स्थान से च्युत हो सकते हैं।

कर्मवाद का सिद्धांत जैन दर्शन में प्रतिष्ठित है। जैन दर्शन में आत्मवाद एक मुख्य सिद्धांत है कि आत्मा है, वह शरीर से पृथक् अस्तित्व वाली है। वह त्रैकालिक है और शाश्वत है। यह आत्मवाद का सिद्धांत है। कर्मवाद में आत्मा तो है ही, पर आत्मा के कर्मों का बंध भी होता है। कर्म के अनुसार फिर जन्म-मरण का चक्र भी चलता है। प्राणी सुख-दुःख का संवेदन करता है।

कर्मवाद के साथ जुड़ा हुआ सिद्धांत है क्रियावाद। क्या करने से कौन-से कर्म का बंध होता है। एक लोकवाद भी सिद्धांत है कि ये दुनिया भी है। लोकालोक वाद भी है। जैन दर्शन में अलोकाकाश का अपना अस्तित्व है। लोकाकाश तो थोड़ा सा है, अलोकाकाश तो अनंत पड़ा है। आकाश का कोई ओर-छोर नहीं। दुनिया में सबसे बड़ा तत्त्व आकाश है। परिमाण में भी आत्मा आकाश से बड़ी नहीं है। केवली समुद्घात में आत्मा पूरे लोक में फैलती है। वह प्रक्रिया अल्पकाल की है। आलोक में नहीं फैलती है।

दुनिया में सबसे आसान काम दूसरों की निंदा करना है। दुनिया में सबसे कठिन काम है—अपनी पहचान, अपनी आत्मा की पहचान। दुनिया में सबसे ज्यादा गतिशील है—आदमी का मन। कितने विचार आते-जाते रहते हैं। कहाँ से कहाँ पहुँच जाता है।

आत्मवाद, कर्मवाद, क्रियावाद और लोकावाद ये जैन दर्शन के चार मुख्य सिद्धांत हैं। हमारे टीपीएफ के लोग बैठे हैं। ये जैन दर्शन के जो सिद्धांत हैं, उनका अध्ययन करें, जानने का प्रयास किया जा सकता है। इन पर हमारे ग्रंथ भी आगमों के आधार पर आए हुए हैं।

कर्मवाद से देवों को भी च्युत होना पड़ता है। कई प्रकार के देव हैं। कर्म चढ़ा भी देते हैं और उतार भी देते हैं। कर्म एक तरह की लिफ्ट है, यह एक प्रसंग से समझाया। आदमी अपने पूर्वार्द्ध या उत्तरार्द्ध में ऊँचे-नीचे पहुँच जाता है। कर्मों में मौलिक रूप में और आध्यात्मिक रूप में भी उन्नति-अवनति कराने की शक्ति होती है। पद-प्रतिष्ठा और अर्थ भौतिकता से जुड़ी चीजें हैं। पर आदमी ने आत्मा की दृष्टि से क्या प्राप्त किया, वे खास बात है।

हम आत्मा के लिए क्या करते हैं? त्याग-संयम हमारे जीवन में कितना है। ये महत्त्वपूर्ण है। आदमी मंत्री बने या न बने पर अच्छा आदमी हमेशा बना रहे। श्रावक जीवन भर रह सकते हैं, पद भले मिले या न मिले। पद तो अस्थायी है। श्रावक की पदवी हमेशा बनी रहे। (शेष पृष्ठ ११ पर)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **संदीप कोठारी** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**